CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2008 with Solution PDF-Set 2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 99**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 1, 4, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जब कभी मछेरे को फेंका हुआ
फैला जाल
समेटते हुए, देखता हूँ
तो अपना सिमटता हुआ
'स्व' याद हो आता है —
जो कभी समाज, गाँव और
परिवार के वृहत्तर रकबे में
समाहित था
'सर्व' की परिभाषा बनकर
और अब केन्द्रित हो
गया हूँ, मात्र बिन्दु में ।
जब कभी अनेक फूलों पर
बैठी, पराग को समेटती
मधुमक्खियों को देखता हूँ
तो मुझे अपने पूर्वजों की
याद हो आती है,
जो कभी फूलों को रंग, जाति, वर्ग
अथवा कबीलों में नहीं बाँटते थे
और समझते रहे थे कि
देश एक बाग है,
और मधु-मनुष्यता
जिससे जीने की अपेक्षा होती है ।
किन्तु अब
बाग और मनुष्यता
शिलालेखों में जकड़ गई है
मात्र संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ । [10 अंक]

1(क). कविता में प्रयुक्त 'स्व' शब्द से कवि का क्या अभिप्राय है ? उसकी जाल से तुलना क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में किसी शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से तय होता है। यहाँ 'स्व' व्यक्ति के आत्मबोध और अपनेपन के दायरे का सूचक है।
- जाल का फैलना और सिमटना मानवीय संबंधों के विस्तार तथा संकुचन को प्रत्यक्ष करने वाला बिंब है।

चरण 1: स्व का प्रसंगगत अर्थ समझिए 'स्व' से कवि का अभिप्राय अपने व्यक्तित्व, अपनेपन और आत्मीय संबंधों की चेतना से है। यह केवल शरीर या नाम का बोध नहीं है। पहले कवि का अपनापन समाज, गाँव और परिवार तक फैला था; वह अपने को उन सबसे जुड़ा हुआ समझता था। 'सर्व की परिभाषा बनकर' इसी व्यापक सामूहिक आत्मबोध को व्यक्त करता है।

चरण 2: जाल से तुलना का कारण बताइए फेंका हुआ जाल दूर तक फैला रहता है, पर मछेरा उसे समेटता है तो उसका फैलाव घट जाता है। इसी प्रकार कवि का कभी व्यापक रहा अपनेपन का क्षेत्र अब संकुचित होकर केवल अपने तक सीमित हो गया है। इसलिए जाल समेटने का दृश्य उसे अपने 'सिमटते हुए स्व' की याद दिलाता है। यहाँ तुलना का आधार दोनों का फैलाव घटकर सीमित हो जाना है।

चरण 3: निष्कर्ष 'स्व' कवि का आत्मबोध और अपनेपन का दायरा है। समेटे जाते जाल की तरह उसके सामाजिक अपनत्व का विस्तार

सिमटकर व्यक्तिगत सीमा में रह गया है, इसलिए दोनों की तुलना हुई है।

त्वरित सुझाव: 'स्व' समझाते समय समाज से व्यक्ति तक आते दायरे को देखें; जाल की तुलना में दोनों के सिमटने की समानता स्पष्ट लिखें।

1(ख). कवि का 'स्व' पहले कैसा था और अब कैसा हो गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में पहले और अब के विरोध से मानवीय चेतना में आए परिवर्तन का बोध होता है।
- 'सर्व' व्यापक सामाजिक आत्मीयता का और 'मात्र बिन्दु' संकुचित व्यक्तिकेंद्रित चेतना का संकेत है।

चरण 1: पहले के स्व का विस्तार बताइए पहले कवि का 'स्व' समाज, गाँव और परिवार के विस्तृत क्षेत्र में समाहित था। वह दूसरों को अपने जीवन से अलग नहीं मानता था; उसका अपनापन सामूहिक था। इसी कारण वह अपने स्व को 'सर्व की परिभाषा' कहता है। इसमें अपने हित के साथ दूसरों के प्रति जुड़ाव और पूरे समुदाय से आत्मीय संबंध का भाव निहित है।

चरण 2: वर्तमान स्वरूप और परिवर्तन का कारण समझिए अब वही 'स्व' सिमटकर 'मात्र बिन्दु' रह गया है। अर्थात् उसका ध्यान अपने छोटे व्यक्तिगत घेरे तक सीमित हो गया है। कविता में आगे रंग, जाति और वर्ग से परे रहने वाले पूर्वजों तथा जड़ होती मनुष्यता का उल्लेख है। इस विरोध से स्पष्ट होता है कि संकीर्णता और व्यक्तिकेंद्रित स्वार्थ ने व्यापक सामाजिक अपनत्व को कमजोर कर दिया है। इसी मानसिक परिवर्तन से उसका स्व संकुचित हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष पहले कवि का स्व समाज, गाँव और परिवार को समेटने वाला व्यापक आत्मबोध था; अब वह अपने तक सीमित है। सामाजिक अपनत्व घटने और व्यक्तिकेंद्रित संकीर्णता बढ़ने से यह परिवर्तन आया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीन बातें अलग रखें: पहले का विस्तार, अब का संकुचन और इस परिवर्तन के पीछे सामाजिक आत्मीयता का क्षय।

1(ग). कवि को अपने पूर्वजों की याद कब और क्यों आती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में प्रकृति का एक दृश्य कवि की स्मृति को जगाता है; उत्तर में दृश्य और स्मृति का कारण दोनों चाहिए।
- अनेक फूलों से पराग समेटती मधुमक्खियाँ भेदभाव से परे समन्वय और मानवीय एकता की प्रतीक हैं।

चरण 1: पूर्वजों की याद आने का अवसर पहचानिए कवि जब अनेक फूलों पर बैठी मधुमक्खियों को पराग समेटते हुए देखता है, तब उसे अपने पूर्वजों की याद आती है। यहाँ स्मृति का कारण केवल फूलों की सुंदरता नहीं, बल्कि विविध फूलों से मधुमक्खियों का बिना भेदभाव पराग ग्रहण करना है। कविता का 'जब कभी' बताता है कि ऐसा दृश्य बार-बार उसे पूर्वजों की सोच का स्मरण कराता है।

चरण 2: दृश्य और पूर्वजों के व्यवहार का संबंध बताइए पूर्वज भी लोगों को रंग, जाति, वर्ग अथवा कबीलों के आधार पर अलग-अलग नहीं बाँटते थे। वे देश को एक बाग और मनुष्यता को उसका मधु मानते थे। जैसे अनेक फूलों का पराग मिलकर मधु का आधार बनता है, वैसे ही विविध लोगों का प्रेमपूर्ण सहअस्तित्व मानवता को पोषित करता है। मधुमक्खियों का यह व्यवहार पूर्वजों की समावेशी और भेदभावरहित दृष्टि से मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष अनेक फूलों से पराग समेटती मधुमक्खियों को देखकर कवि को पूर्वज याद आते हैं, क्योंकि वे भी रंग, जाति और वर्ग का भेद किए बिना सबको एक मानते तथा मनुष्यता को जीवन का आधार समझते थे।

त्वरित सुझाव: 'कब' के लिए मधुमक्खियों का दृश्य और 'क्यों' के लिए पूर्वजों की भेदभावरहित दृष्टि लिखें; केवल एक पक्ष लिखकर न रुकें।

1(घ). उसके पूर्वजों की विचारधारा पर टिप्पणी लिखिए ! [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी विचारधारा पर टिप्पणी करते समय उसके मूल मूल्य और कविता में मिले प्रमाण स्पष्ट करने चाहिए।
- देश को बाग और मनुष्यता को मधु मानना विविधता में एकता, समानता और मानवीय प्रेम की दृष्टि व्यक्त करता है।

चरण 1: पूर्वजों की समानतापूर्ण दृष्टि पहचानिए कवि के पूर्वजों की विचारधारा उदार और मानवतावादी थी। वे मनुष्यों को रंग, जाति, वर्ग अथवा कबीलों में बाँटकर ऊँचा-नीचा नहीं मानते थे। कविता में फूलों को इन खाँचों में न बाँटने का कथन इसी सामाजिक दृष्टि का रूपक है। विविधता उनके लिए अलगाव का कारण नहीं थी; वे सभी को एक साझा समुदाय का अंग समझते थे।

चरण 2: देश और मनुष्यता संबंधी मान्यता समझाइए पूर्वज देश को एक बाग मानते थे, जिसमें अलग-अलग फूलों की तरह विविध लोग मिलकर रहते हैं। उनके लिए मनुष्यता उस बाग का मधु है, जो जीवन को अर्थ और मधुरता देता है। इसलिए उनकी दृष्टि में मनुष्य का महत्त्व उसकी जातिगत अथवा वर्गगत पहचान से अधिक उसके मानवीय संबंधों में है। यह विचारधारा आपसी प्रेम, समानता, एकता और सहअस्तित्व का समर्थन करती है।

चरण 3: निष्कर्ष पूर्वजों की विचारधारा उदार, समानतावादी और मानवतावादी थी। वे सामाजिक भेदभाव को अस्वीकार कर देश की एकता तथा मनुष्यता को जीवन का आवश्यक आधार मानते थे।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी को प्रमाण सहित लिखें: फूलों को न बाँटना समानता का और बाग का मधु मनुष्यता होना मानवीय एकता का संकेत है।

1(ङ). निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

"और मनुष्यता
शिलालेखों में जकड़ गई है ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्तियों का आशय समझाते समय शब्दों के संकेतार्थ को पूरे काव्यांश के भाव से जोड़ना चाहिए।
- 'शिलालेख' और 'संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ' जीवंत आचरण के स्थान पर केवल स्मृति तथा लिखित आदर्श शेष रहने का संकेत हैं।

चरण 1: शिलालेखों में जकड़ने का संकेत समझिए शिलालेख पत्थर पर लिखे स्थिर अभिलेख होते हैं। मनुष्यता का उनमें 'जकड़ जाना' कहने का आशय है कि प्रेम, समानता और भाईचारे के आदर्श केवल लिखित उपदेशों या बीते समय की यादों में रह गए हैं। जिन मूल्यों को मनुष्य के दैनिक व्यवहार में सक्रिय होना चाहिए था, वे केवल पढ़ने अथवा प्रदर्शित करने की वस्तु बन गए हैं।

चरण 2: कविता के व्यापक भाव से आशय जोड़िए पूर्वज देश को बाग और मनुष्यता को उसका मधु मानते थे; वे लोगों को रंग, जाति या वर्ग में नहीं बाँटते थे। वर्तमान की तुलना में कवि दिखाता है कि वह आत्मीयता अब व्यवहार में कमजोर पड़ गई है। आगे का कथन 'मात्र संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ' इसी निष्क्रियता को स्पष्ट करता है। पंक्तियों में मानवता के जीवंत सामाजिक मूल्य से निर्जीव स्मारक बन जाने पर पीड़ा और विडंबना व्यक्त हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों का आशय है कि मनुष्यता के प्रेम, समानता और भाईचारे जैसे मूल्य जीवन के व्यवहार से हटकर केवल अभिलेखों तथा ऐतिहासिक स्मृतियों तक सीमित हो गए हैं। कवि इसी संवेदनहीनता पर दुख व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: आशय में पत्थर के लेख का शाब्दिक वर्णन भर न दें; लिखित आदर्श और वास्तविक मानवीय आचरण के अंतर को स्पष्ट करें।

अथवा

1. तू हिमालय नहीं, तू न गंगा-यमुना
तू त्रिवेणी नहीं, तू न रामेश्वरम्
तू महाशील की है अमर कल्पना
देश ! मेरे लिए तू परम वंदना ।
मेघ करते नमन, सिंधु होता चरण,
लहलहाते सहस्रों यहाँ खेत-वन ।
नर्मदा-ताप्ती, सिंधु, गोदावरी,
हैं कराती युगों से तुझे आचमन ।
तू पुरातन बहुत, तू नए से नया
तू महाशील की है अमर कल्पना ।
देश ! मेरे लिए तू महा अर्चना ।
शक्ति-बल का समर्थक रहा सर्वदा,
तू परम तत्त्व का नित विचारक रहा ।
शांति-संदेश देता रहा विश्व को ।
प्रेम-सद्भाव का नित प्रचारक रहा ।
सत्य औ' प्रेम की है परम प्रेरणा
देश ! मेरे लिए तू महा अर्चना । [10 अंक]

1(क). कवि का देश को 'महाशील की अमर कल्पना' कहने से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राष्ट्र का काव्यात्मक स्वरूप केवल भूगोल से नहीं, उसकी सांस्कृतिक चेतना और जीवन-मूल्यों से भी निर्मित होता है।
- 'महाशील' महान चरित्र और उदात्त आचरण का संकेत है; 'अमर' उन मूल्यों की निरंतर प्रेरक शक्ति बताता है।

चरण 1: महाशील का प्रसंगगत अर्थ स्पष्ट कीजिए कवि देश को केवल हिमालय, गंगा-यमुना, त्रिवेणी या रामेश्वरम् जैसे भौगोलिक और धार्मिक स्थलों का समूह नहीं मानता। 'महाशील' कहकर वह उसके महान नैतिक व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है। कविता में आए सत्य, प्रेम, शांति और सद्भाव इस महान चरित्र के गुण हैं। इसलिए देश का वास्तविक गौरव उसके ऊँचे मानवीय आदर्शों में है।

चरण 2: अमर कल्पना कहने का तात्पर्य समझाइए देश युगों से परम तत्त्व का विचार करता, विश्व को शांति का संदेश देता और प्रेम-सद्भाव का प्रचार करता रहा है। ये आदर्श किसी एक समय या स्थान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि निरंतर मानव जीवन को प्रेरणा देते हैं। इसी स्थायी, उदात्त सांस्कृतिक स्वरूप को कवि 'महाशील की अमर कल्पना' कहता है। इसीलिए देश उसके लिए गहरी वंदना और अर्चना का विषय भी है।

चरण 3: निष्कर्ष 'महाशील की अमर कल्पना' का तात्पर्य सत्य, प्रेम, शांति और सद्भाव जैसे शाश्वत आदर्शों से युक्त देश के महान नैतिक-सांस्कृतिक व्यक्तित्व से है। कवि के लिए यही उसका पूजनीय स्वरूप है।

त्वरित सुझाव: 'महाशील' का अर्थ महान चरित्र से जोड़ें और उसके गुण इसी काव्यांश के सत्य, प्रेम, शांति तथा सद्भाव से प्रमाणित करें।

1(ख). भारत देश पुरातन होते हुए भी नित नूतन कैसे है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में 'पुरातन' और 'नए से नया' का साथ आना परंपरा की निरंतरता और उसकी वर्तमान प्रासंगिकता व्यक्त करता है।
- देश की प्राचीन सांस्कृतिक चेतना के सत्य, प्रेम और शांति जैसे मूल्य हर युग में नई प्रेरणा बनते हैं।

चरण 1: देश के पुरातन होने का आधार पहचानिए भारत की सांस्कृतिक और चिंतनपरक परंपरा अत्यंत प्राचीन है। कविता में नदियों का 'युगों से' आचमन कराना और देश का परम तत्त्व का नित्य विचारक होना इस दीर्घ परंपरा की ओर संकेत करता है। शांति, प्रेम और सद्भाव का संदेश भी उसके लंबे सांस्कृतिक जीवन से जुड़ा है। इस अर्थ में देश पुरातन है और उसकी जड़ें बहुत गहरी हैं।

चरण 2: उसी परंपरा की नूतनता समझाइए पुरातन होने का अर्थ जड़ हो जाना नहीं है। देश के सत्य, प्रेम, शांति और सद्भाव के आदर्श हर समय मानव जीवन के लिए उपयोगी रहते हैं और नई पीढ़ियों को प्रेरित करते हैं। कविता का 'नित प्रचारक' तथा 'परम प्रेरणा' कहना इसी सतत सक्रियता को प्रकट करता है। अपनी मूल सांस्कृतिक चेतना बनाए रखते हुए नए समय में नई स्फूर्ति देना देश को 'नए से नया' बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत अपनी प्राचीन सभ्यता और विचार-परंपरा के कारण पुरातन है, किंतु उसके सत्य, प्रेम, शांति और सद्भाव के मूल्य प्रत्येक युग को नई प्रेरणा देते हैं। इसी निरंतर प्रासंगिक और सजीव चेतना से वह नित नूतन है।

त्वरित सुझाव: दोनों पक्ष जोड़ें: प्राचीन परंपरा उसकी पुरातनता है और उन्हीं मानवीय मूल्यों की हर युग में जीवंत प्रेरणा उसकी नूतनता।

1(ग). 'तू परम तत्त्व का नित विचारक रहा' पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में कविता के शब्दों के पीछे निहित व्यापक विचार को सरल भाषा में स्पष्ट किया जाता है।
- इस पंक्ति में 'परम तत्त्व' जीवन और जगत के मूल सत्य का संकेत है तथा 'नित विचारक' निरंतर चिंतन की परंपरा को व्यक्त करता है।

चरण 1: प्रमुख शब्दों का आशय समझिए कवि देश को संबोधित करते हुए कहता है कि वह सदा परम तत्त्व का विचारक रहा है। यहाँ विचार का विषय केवल भौतिक शक्ति या बाहरी वैभव नहीं, बल्कि अस्तित्व का मूल आधार और जीवन का गहरा सत्य है। 'नित' शब्द बताता है कि यह चिंतन कभी-कभार की घटना नहीं, देश की निरंतर चली आ रही प्रवृत्ति है।

चरण 2: काव्यांश से भाव को जोड़िए इससे पहले देश को शक्ति-बल का समर्थक और आगे सत्य तथा प्रेम की प्रेरणा कहा गया है। इस संदर्भ में पंक्ति भारत की चिंतनशील और आध्यात्मिक संस्कृति की प्रशंसा करती है। देश ने शक्ति को महत्त्व देते हुए भी जीवन के उच्चतर सत्य की खोज तथा मनुष्य के भीतरी विकास का विचार नहीं छोड़ा।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का भाव है कि भारत प्राचीन काल से जीवन और सृष्टि के मूल सत्य का निरंतर चिंतन करता रहा है। आध्यात्मिक ज्ञान और सत्य की खोज उसकी सांस्कृतिक परंपरा का महत्त्वपूर्ण अंग रही है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ लिखते समय 'परम तत्त्व' को मूल सत्य और 'नित' को निरंतर चिंतन से जोड़ें; केवल शब्दों का पर्याय न लिखें।

1(घ). देश का सत्कार प्रकृति कैसे करती है ? काव्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्रकृति को मनुष्य की तरह व्यवहार करते दिखाने से भाव अधिक सजीव हो जाता है।
- देश के सत्कार का उत्तर बादलों, समुद्र, खेतों-वनों और नदियों से संबंधित काव्य-बिंबों पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1: नमन और समृद्धि के चित्र पहचानिए 'मेघ करते नमन' से लगता है कि बादल देश के सम्मान में झुककर उसे प्रणाम करते हैं। समुद्र देश के चरणों से जुड़ा हुआ चित्रित है। सहस्रों लहलहाते खेत और वन देश की धरती को हरियाली तथा समृद्धि प्रदान करते हैं। इन दृश्यों से प्रकृति की श्रद्धा और देश का प्राकृतिक वैभव प्रकट होता है।

चरण 2: नदियों के स्वागत-भाव को स्पष्ट कीजिए नर्मदा, ताप्ती, सिंधु और गोदावरी युगों से देश को आचमन कराती बताई गई हैं। आचमन के लिए जल देना यहाँ आदरपूर्ण सत्कार का बिंब है। नदियों का प्रवाह केवल प्राकृतिक घटना नहीं रह जाता; वह देश के प्रति सम्मान और सेवा की भावना का रूप ले लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रकृति देश का सत्कार मेघों के नमन, समुद्र के चरणों से जुड़े होने, लहलहाते खेतों-वनों की शोभा और नदियों द्वारा आचमन कराने के रूप में करती है। संपूर्ण प्राकृतिक संसार मानो आदरपूर्वक देश की वंदना करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रकृति के चार रूप क्रम से लें: मेघ, समुद्र, खेत-वन और नदियाँ; प्रत्येक के साथ कविता में दी गई क्रिया जोड़ें।

1(ङ). "शांति-संदेश ..... रहा" काव्य-पंक्तियों का अर्थ बताते हुए इस कथन की पुष्टि में इतिहास से कोई एक प्रमाण दीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्तियों का आशय उनके प्रमुख भावों, यहाँ शांति, प्रेम और सद्भाव, को स्पष्ट करके बताया जाता है।
- ऐतिहासिक प्रमाण ऐसा उदाहरण होना चाहिए जिसमें शांति की स्थापना या प्रचार का ठोस कार्य दिखाई दे।

चरण 1: पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए 'शांति-संदेश देता रहा विश्व को' तथा 'प्रेम-सद्भाव का नित प्रचारक रहा' का आशय है कि भारत ने संसार को परस्पर प्रेम से रहने और वैर-भाव छोड़ने की प्रेरणा दी है। सद्भाव का अर्थ दूसरे के प्रति शुभ भावना रखना है। कवि देश की ऐसी सांस्कृतिक परंपरा को रेखांकित करता है जो मानव-समाज में मेल-जोल और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का समर्थन करती है।

चरण 2: इतिहास से उपयुक्त प्रमाण दीजिए इसका एक उदाहरण सम्राट अशोक है। कलिंग युद्ध की भीषण हिंसा और जनहानि से व्यथित होकर अशोक ने युद्ध द्वारा विजय की अपेक्षा धम्म के प्रचार को महत्त्व दिया। उसने करुणा, प्राणियों के प्रति दया और धार्मिक सहिष्णुता का संदेश फैलाया। यह घटना दिखाती है कि भारतीय इतिहास में शक्ति के साथ शांति और मानवीय सद्भाव को भी आदर्श माना गया है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्तियाँ भारत को विश्व में शांति, प्रेम और सद्भाव का संदेशवाहक बताती हैं। कलिंग युद्ध के बाद अशोक द्वारा धम्म, करुणा तथा सहिष्णुता का प्रचार इस कथन का एक उपयुक्त ऐतिहासिक प्रमाण है।

त्वरित सुझाव: पहले शांति और सद्भाव का अर्थ लिखें, फिर अशोक के उदाहरण में कलिंग युद्ध के बाद आया परिवर्तन स्पष्ट करें।

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

वैदिक युग भारत का प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल था । यही कारण है कि आज तक भारत का मन उस काल की ओर बार-बार लोभ से देखता है । वैदिक आर्य अपने युग को स्वर्णकाल कहते थे या नहीं, यह हम नहीं जानते; किन्तु उनका समय हमें स्वर्णकाल के समान अवश्य दिखाई देता है । लेकिन जब बौद्ध युग का आरम्भ हुआ, वैदिक समाज की पोल खुलने लगी और चिंतकों के बीच उसकी आलोचना आरम्भ हो गई । बौद्ध-युग अनेक दृष्टियों से आज के आधुनिकता-आन्दोलन के समान था । ब्राह्मणों की श्रेष्ठता के विरुद्ध बुद्ध ने विद्रोह का प्रचार किया था, जाति-प्रथा के बुद्ध विरोधी थे और मनुष्य को वे जन्मना नहीं, कर्मणा श्रेष्ठ या अधम मानते थे । नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार देकर उन्होंने यह बताया था कि मोक्ष केवल पुरुषों के ही निमित्त नहीं है, उसकी अधिकारिणी नारियाँ भी हो सकती हैं । बुद्ध की ये सारी बातें भारत को याद रही हैं और बुद्ध के समय से बराबर इस देश में ऐसे लोग उत्पन्न होते रहे हैं, जो जाति-प्रथा के विरोधी थे, जो मनुष्य को जन्मना नहीं, कर्मणा श्रेष्ठ या अधम समझते थे । किन्तु बुद्ध में आधुनिकता से बेमेल बात यह थी कि वे निवृत्तिवादी थे, गृहस्थी के कर्म से वे भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ समझते थे । उनकी प्रेरणा से देश के हजारों-लाखों युवक, जो उत्पादन बढ़ाकर समाज का भरण-पोषण करने के लायक़ थे, संन्यासी हो गए । संन्यास की संस्था समाज-विरोधिनी संस्था है । [10 अंक]

2(क). वैदिक युग स्वर्णकाल के समान क्यों प्रतीत होता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'क्यों' वाले प्रश्न का उत्तर गद्यांश में दिए गए कारण और उसके परिणाम को जोड़कर लिखा जाता है।
- यहाँ लेखक वैदिक युग के स्वाभाविक स्वरूप और उसके प्रति आज भी बने हुए आकर्षण को महत्त्व देता है।

चरण 1: लेखक द्वारा दिया गया कारण पहचानिए गद्यांश की पहली पंक्ति में वैदिक युग को भारत का प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल कहा गया है। यही उसकी विशेषता है। अगली पंक्ति में 'यही कारण है' कहकर लेखक स्पष्ट करता है कि भारतीय मन आज भी उस युग की ओर आकर्षित होता है। उत्तर का आधार यह प्रत्यक्ष कारण-संबंध होना चाहिए।

चरण 2: स्वर्णकाल कहने का आशय समझिए उस काल की स्वाभाविकता और उसके प्रति बने आकर्षण के कारण वह हमें आदर्श तथा मनोहर समय जैसा दिखाई देता है। लेखक यह दावा नहीं करता कि वैदिक आर्य स्वयं उसे स्वर्णकाल कहते थे। वह केवल हमारे दृष्टिकोण की बात करता है कि उनका समय हमें स्वर्णकाल के समान प्रतीत होता है।

चरण 3: निष्कर्ष वैदिक युग भारत का प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल था। उसकी इसी विशेषता के कारण भारतीय मन आज भी उसकी ओर आकर्षित होता है और वह हमें स्वर्णकाल के समान प्रतीत होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहली दो पंक्तियों का कारण-संबंध लें; वैदिक युग की समृद्धि या समानता जैसी गद्यांश में न दी गई बातें न जोड़ें।

2(ख). जाति-प्रथा एवं नारियों के विषय में बुद्ध के विचारों को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में दो अलग विषय पूछे गए हैं: जाति-प्रथा पर बुद्ध का दृष्टिकोण और नारियों के आध्यात्मिक अधिकार।
- जन्मना का अर्थ जन्म के आधार पर और कर्मणा का अर्थ आचरण तथा कर्म के आधार पर है।

चरण 1: जाति-प्रथा संबंधी विचार स्पष्ट कीजिए बुद्ध जाति-प्रथा के विरोधी थे। उन्होंने ब्राह्मणों की जन्म-आधारित श्रेष्ठता का विरोध किया। उनके अनुसार किसी मनुष्य को उसके जन्म या जाति के कारण श्रेष्ठ अथवा अधम नहीं माना जा सकता; उसका मूल्यांकन उसके कर्मों के आधार पर होना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने श्रेष्ठता की कसौटी जन्म के स्थान पर कर्म को बनाया।

चरण 2: नारियों संबंधी विचार स्पष्ट कीजिए बुद्ध ने नारियों को भिक्षुणी बनने का अधिकार दिया। इससे उन्होंने बताया कि मोक्ष केवल पुरुषों के लिए सुरक्षित नहीं है, स्त्रियाँ भी उसकी अधिकारिणी हो सकती हैं। गद्यांश में यह कार्य नारी के आध्यात्मिक अधिकार की स्वीकृति के रूप में आया है। इसलिए उत्तर में भिक्षुणी बनने के अधिकार और मोक्ष की पात्रता, दोनों का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष बुद्ध जातिगत ऊँच-नीच के विरोधी थे और मनुष्य को जन्म के बजाय कर्म से श्रेष्ठ या अधम मानते थे। उन्होंने नारियों

को भिक्षुणी बनने का अधिकार देकर उन्हें भी पुरुषों की भाँति मोक्ष की अधिकारिणी स्वीकार किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो हिस्सों में बाँटें: जाति के लिए 'जन्म नहीं, कर्म' और नारी के लिए 'भिक्षुणी तथा मोक्ष का अधिकार' लिखें।

2(ग). बुद्ध की कौन-सी बात आधुनिकता के प्रसंग में ठीक नहीं बैठती ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में किसी विचार का मूल्यांकन लेखक के दिए हुए तर्क के आधार पर करना चाहिए।
- निवृत्तिवाद यहाँ गृहस्थ जीवन और उसके कर्मों की अपेक्षा भिक्षु-जीवन को श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति है।

चरण 1: आधुनिकता से बेमेल विचार पहचानिए लेखक बुद्ध के जाति-विरोध और स्त्रियों के अधिकार संबंधी विचारों को आधुनिकता के अनुकूल बताता है। इसके बाद 'किन्तु' शब्द से वह अपवाद प्रस्तुत करता है: बुद्ध निवृत्तिवादी थे। वे गृहस्थी के कर्म से भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ समझते थे। इसी बात को प्रश्न में आधुनिकता के प्रसंग में ठीक न बैठने वाली बात कहा गया है।

चरण 2: असंगति का कारण समझिए गद्यांश के अनुसार समाज का भरण-पोषण उत्पादन करने वाले कर्मशील लोगों से होता है। भिक्षु-धर्म को अधिक श्रेष्ठ मानने की प्रेरणा से अनेक सक्षम युवक गृहस्थी और उत्पादन के काम छोड़कर संन्यासी हो गए। लेखक की दृष्टि में सामाजिक उत्तरदायित्व तथा उत्पादक कर्म से ऐसी निवृत्ति आधुनिकता के अनुकूल नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष बुद्ध का निवृत्तिवादी होना आधुनिकता से मेल नहीं खाता। वे गृहस्थी के कर्म की अपेक्षा भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ मानते थे, जिससे समाज का उत्पादन और भरण-पोषण कर सकने वाले युवक संन्यास की ओर प्रेरित हुए।

त्वरित सुझाव: 'किन्तु' से शुरू होने वाले वाक्य पर ध्यान दें; वही प्रशंसित विचारों से अलग आधुनिकता-विरोधी पहलू स्पष्ट करता है।

2(घ). संन्यास की संस्था से समाज को क्या हानि पहुँचती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में संन्यास की संस्था का प्रभाव पूछा गया है; उत्तर लेखक की सामाजिक और आर्थिक दृष्टि पर आधारित होना चाहिए।
- गद्यांश उत्पादक श्रम, समाज के भरण-पोषण और सक्षम युवकों की भूमिका के बीच संबंध स्थापित करता है।

चरण 1: समाज के लिए उपयोगी भूमिका पहचानिए लेखक के अनुसार अनेक युवक उत्पादन बढ़ाकर समाज का भरण-पोषण करने के योग्य थे। उनका श्रम समाज की आवश्यकताओं को पूरा कर सकता था। इसलिए ऐसे लोगों की उत्पादक कार्यों में भागीदारी समाज के पोषण और विकास के लिए उपयोगी होती है। गद्यांश में युवकों की इसी क्षमता पर बल दिया गया है।

चरण 2: संन्यास से होने वाली हानि समझिए जब ऐसे हजारों-लाखों युवक संन्यासी हो गए, तो समाज उनके उत्पादक श्रम से वंचित हो गया। जो लोग उत्पादन में वृद्धि और भरण-पोषण में योगदान दे सकते थे, वे उन कार्यों से हट गए। लेखक संन्यास की संस्था को इसी कारण समाज-विरोधिनी कहता है; उसका तर्क समाज को मिलने वाले श्रम और योगदान की हानि पर केंद्रित है।

चरण 3: निष्कर्ष संन्यास की संस्था से सक्षम युवक उत्पादक कर्म छोड़ देते हैं। इससे समाज उनके श्रम, उत्पादन बढ़ाने की क्षमता और भरण-पोषण में मिलने वाले योगदान से वंचित होता है। गद्यांश के अनुसार यही उसकी सामाजिक हानि है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कारण की कड़ी बनाएँ: सक्षम युवक संन्यासी बने, उत्पादक श्रम छूटा और समाज के भरण-पोषण को मिलने वाला योगदान घटा।

2(ङ). उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक गद्यांश के केंद्रीय विचार का संक्षिप्त संकेत होता है; उसमें केवल आरंभिक उदाहरण या किसी एक गौण बात को स्थान नहीं देना चाहिए।
- इस गद्यांश में बुद्ध के सामाजिक विचारों को आधुनिकता की कसौटी पर परखा गया है। उनकी समानतावादी दृष्टि और निवृत्तिवाद, दोनों पर लेखक विचार करता है।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानिए वैदिक युग के परिचय के बाद लेखक का मुख्य ध्यान बौद्ध युग पर है। वह बुद्ध के जाति-प्रथा के विरोध, जन्म के स्थान पर कर्म से मनुष्य की श्रेष्ठता के निर्णय तथा नारियों को मोक्ष का अधिकार देने का उल्लेख करता है। इन्हीं आधारों पर बौद्ध युग की तुलना आधुनिकता-आंदोलन से की गई है।

चरण 2: पूरे विचार को समेटने वाला शीर्षक चुनिए गद्यांश का अंतिम अंश बताता है कि बुद्ध का निवृत्तिवाद आधुनिकता से मेल नहीं खाता, क्योंकि समर्थ युवकों के संन्यासी बन जाने से उत्पादन और समाज का भरण-पोषण प्रभावित होता है। इसलिए केवल जाति-प्रथा, नारी-अधिकार या वैदिक स्वर्णकाल को शीर्षक बनाना अधूरा होगा। 'बुद्ध के विचार और आधुनिकता' शीर्षक उनके आधुनिक विचारों तथा आधुनिकता से असंगत पक्ष, दोनों को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है—**बुद्ध के विचार और आधुनिकता**।

त्वरित सुझाव: शीर्षक तय करते समय गद्यांश के अंतिम विचार को भी जाँचें; यहाँ समानता के साथ निवृत्तिवाद की समीक्षा भी केंद्रीय विषय का हिस्सा है।

---

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

(क) विश्व-क्रिकेट में भारत का स्थान

(ख) जनसंख्या-विस्फोट : एक समस्या

(ग) पुस्तक-मेले व उनकी सार्थकता

(घ) हूँ मज़दूर, मगर निर्माता [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषयानुकूल शीर्षक, संक्षिप्त भूमिका, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार होना चाहिए। भाषा स्पष्ट, प्रवाहपूर्ण तथा विचारों से जुड़ी हो।
- प्रत्येक नमूना निबंध लगभग 200 शब्दों में दिया गया है। परीक्षा में किसी एक विषय का चयन करना है; अभ्यास के लिए चारों विषयों के उत्तर प्रस्तुत हैं।

चरण 1: विषयानुसार रूपरेखा बनाइए क्रिकेट के निबंध में भारत की उपलब्धियाँ, प्रतिभाएँ और चुनौतियाँ रखें। जनसंख्या के विषय में कारण, प्रभाव और समाधान का क्रम अपनाएँ। पुस्तक-मेले के विषय में ज्ञान, पाठकीय संस्कृति और आयोजन की उपयोगिता समझाएँ। मज़दूर वाले निबंध में प्रथम पुरुष शैली में श्रम का योगदान, कठिनाइयाँ और सम्मान की माँग व्यक्त करें। हर निबंध का अंतिम अनुच्छेद उसी के मुख्य विचार को आगे बढ़ाए।

चरण 2: विषय (क) का नमूना निबंध **विश्व-क्रिकेट में भारत का स्थान**

भारत में क्रिकेट केवल खेल नहीं, करोड़ों लोगों की रुचि और उत्साह का केंद्र है। गली के छोटे मैदान से अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम तक इसकी लोकप्रियता दिखाई देती है। भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा और परिश्रम से विश्व-क्रिकेट में देश को महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है।

कपिल देव के नेतृत्व में 1983 का विश्वकप जीतना भारतीय क्रिकेट की ऐतिहासिक उपलब्धि थी। इस विजय ने खिलाड़ियों और दर्शकों में विश्वास जगाया कि भारत बड़ी टीमों को चुनौती दे सकता है। सुनील गावस्कर, सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़ और अनिल कुंबले जैसे

खिलाड़ियों ने बल्लेबाज़ी तथा गेंदबाज़ी में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। 2007 के ट्वेंटी-ट्वेंटी विश्वकप की विजय ने युवा प्रतिभा की क्षमता भी सिद्ध की।

फिर भी उपलब्धियों के साथ चुनौतियाँ बनी रहती हैं। विदेशी परिस्थितियों में लगातार अच्छा प्रदर्शन, चुस्त क्षेत्ररक्षण और खिलाड़ियों की शारीरिक क्षमता पर ध्यान आवश्यक है। छोटे नगरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों की प्रतिभाओं को प्रशिक्षण और उचित अवसर मिलने चाहिए। चयन में निष्पक्षता तथा खेल में अनुशासन भी अनिवार्य हैं।

दर्शकों को जीत पर खिलाड़ियों का सम्मान करना चाहिए, पर हार पर संयम भी रखना चाहिए। क्रिकेट की लोकप्रियता अन्य खेलों की उपेक्षा का कारण न बने। योजनाबद्ध तैयारी, खेलभावना और सामूहिक प्रयास से भारत विश्व-क्रिकेट में अपना स्थान और सुदृढ़ कर सकता है।

चरण 3: विषय (ख) का नमूना निबंध **जनसंख्या-विस्फोट : एक समस्या**

जनसंख्या किसी देश की शक्ति होती है, लेकिन संसाधनों और सुविधाओं की वृद्धि से बहुत तेज़ गति से बढ़ती जनसंख्या गंभीर समस्या बन जाती है। जनसंख्या-विस्फोट का अर्थ केवल अधिक लोग होना नहीं, बल्कि उनके जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति में असंतुलन पैदा होना है।

अशिक्षा, कम उम्र में विवाह, परिवार-नियोजन संबंधी जानकारी का अभाव और पुत्र की चाह इस समस्या को बढ़ाते हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार से मृत्यु-दर घटती है; इसलिए परिवार के आकार के प्रति जागरूकता और अधिक आवश्यक हो जाती है।

तीव्र जनसंख्या-वृद्धि से विद्यालयों, अस्पतालों, आवास और यातायात पर दबाव बढ़ता है। रोज़गार के अवसर पर्याप्त न हों तो बेरोज़गारी और गरीबी गहराती हैं। पानी, भोजन और ऊर्जा की माँग बढ़ने से प्राकृतिक संसाधनों का अधिक दोहन होता है। नगरों में भीड़, झुग्गियाँ और प्रदूषण बढ़ते हैं। इसका प्रभाव परिवारों के पोषण तथा बच्चों की पढ़ाई पर भी पड़ता है।

समाधान के लिए सबको शिक्षा, विशेषकर लड़कियों को समान अवसर देना आवश्यक है। बाल-विवाह रोकना, महिलाओं को निर्णय का अधिकार देना और स्वास्थ्य सेवाएँ सुलभ बनाना उपयोगी उपाय हैं। परिवार-नियोजन की जानकारी सम्मानपूर्वक और स्वैच्छिक रूप से पहुँचाई जानी चाहिए।

जागरूक नागरिक और उत्तरदायी शासन मिलकर जनसंख्या तथा संसाधनों में संतुलन स्थापित कर सकते हैं। तभी विकास का लाभ प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचेगा।

चरण 4: विषय (ग) का नमूना निबंध **पुस्तक-मेले व उनकी सार्थकता**

पुस्तकें मनुष्य की विश्वसनीय मित्र हैं। वे अनुभवों का विस्तार करती हैं और सोचने की नई दृष्टि देती हैं। पुस्तक-मेले इस ज्ञान-संपदा को एक स्थान पर उपलब्ध कराकर पाठक और पुस्तक के बीच जीवंत संबंध बनाते हैं।

पुस्तक-मेले में साहित्य, विज्ञान, इतिहास, कला तथा बाल-साहित्य की विविध पुस्तकें मिलती हैं। अनेक भाषाओं और प्रकाशकों की कृतियों को देखकर पाठक अपनी रुचि पहचानता है। वह पुस्तकों को उलट-पलटकर उनकी विषयवस्तु समझ सकता है और तुलना करके उचित चुनाव कर सकता है। लेखकों से संवाद, परिचर्चाएँ और पुस्तक-विमोचन पढ़ने के अनुभव को अधिक रोचक बनाते हैं।

विद्यार्थियों के लिए ऐसे आयोजन विशेष उपयोगी हैं। पाठ्यपुस्तकों से आगे की दुनिया उनके सामने खुलती है। बच्चों में जिज्ञासा और पढ़ने की आदत विकसित होती है। नए लेखकों और छोटे प्रकाशकों को भी पाठकों तक पहुँचने का अवसर मिलता है। विभिन्न भाषाओं की पुस्तकें सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ाती हैं।

किंतु मेले की सार्थकता केवल भीड़ या बिक्री से नहीं आँकी जानी चाहिए। पुस्तकें उचित मूल्य पर मिलें, आयोजन तक पहुँचना आसान हो और ग्रामीण पाठकों को भी अवसर मिले। विद्यालयों तथा पुस्तकालयों को ऐसे मेलों से जोड़ना उपयोगी होगा।

पुस्तक-मेले तभी अपना उद्देश्य पूरा करते हैं जब खरीदी गई पुस्तकें पढ़ी जाएँ और विचारों पर संवाद हो। वे मनोरंजन के साथ विवेकशील समाज के निर्माण का माध्यम बन सकते हैं।

चरण 5: विषय (घ) का नमूना निबंध **हूँ मज़दूर, मगर निर्माता**

मैं मज़दूर हूँ। मेरे हाथों पर कठोर श्रम के निशान हैं और कपड़ों पर धूल जमी रहती है। फिर भी मुझे अपने काम पर गर्व है, क्योंकि मेरे श्रम से घर, सड़कें, पुल और कारखाने आकार लेते हैं।

सुबह होते ही मैं काम पर निकल पड़ता हूँ। कभी ईंटें ढोता हूँ, कभी गारा मिलाता हूँ, तो कभी तपती धूप में सड़क बनाता हूँ। ऊँची इमारतों को देखकर लोग उनकी सुंदरता की प्रशंसा करते हैं, पर उनमें लगी मेरी मेहनत प्रायः अनदेखी रह जाती है। जिन मकानों को मैं बनाता हूँ, वैसा सुरक्षित घर मेरे अपने परिवार को भी चाहिए।

मेरी इच्छाएँ बहुत साधारण हैं। मुझे उचित मज़दूरी, नियमित काम और कार्यस्थल पर सुरक्षा मिले। बीमारी या दुर्घटना में सहायता उपलब्ध हो। मेरे बच्चे पढ़ सकें और अपनी पसंद का भविष्य चुन सकें। मैं नहीं चाहता कि अभाव उन्हें कम उम्र में मज़दूरी करने को विवश कर दे।

श्रम करने से कोई छोटा नहीं होता। समाज का विकास किसान, कारीगर और मज़दूर सहित सभी के परिश्रम से संभव होता है। इसलिए मेरे प्रति दया से अधिक न्याय और सम्मान आवश्यक हैं।

मैं अपनी मेहनत से रोटी कमाता हूँ और देश के निर्माण में भाग लेता हूँ। मेरे हाथ केवल बोझ नहीं उठाते; वे भविष्य की नींव रखते हैं। सचमुच, हूँ मज़दूर, मगर निर्माता।

चरण 6: निष्कर्ष चारों नमूने अपने विषय के अनुरूप भूमिका, मुख्य विवेचन और उपसंहार प्रस्तुत करते हैं। चयनित विषय पर इसी क्रम में लगभग 200 शब्दों का स्वतंत्र, सुसंगत निबंध लिखा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: चुने हुए विषय के लिए पहले तीन मुख्य बिंदु लिखें; 'हूँ मज़दूर' में 'मैं' की शैली और शेष विषयों में विवेचनात्मक शैली बनाए रखें।

---

4. आपके क्षेत्र में स्थित एक औद्योगिक संस्थान का गन्दा पानी आपके नगर की नदी को दूषित कर रहा है । प्रदूषण-नियंत्रण-विभाग के मुख्य अधिकारी को पत्र द्वारा इस समस्या से अवगत कराइए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायत-पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, अधिकारी का पद और पता, विषय, संबोधन, समस्या का विवरण, कार्रवाई का अनुरोध तथा समापन होना चाहिए।
- भाषा विनम्र, स्पष्ट और तथ्यपरक रखी जाती है। पत्र का उद्देश्य जिम्मेदार विभाग को समस्या की जानकारी देकर जाँच और समाधान के लिए प्रेरित करना है।

चरण 1: पत्र की रूपरेखा और मुख्य बिंदु तय कीजिए पत्र प्रदूषण-नियंत्रण-विभाग के मुख्य अधिकारी को संबोधित होगा। मुख्य भाग में औद्योगिक संस्थान के गंदे पानी का नदी में बहना, उसके कारण जल का दूषित होना तथा नागरिकों और जलीय जीवन पर पड़ने वाली समस्या स्पष्ट करें। अंत में निरीक्षण, पानी के नमूनों की जाँच, अपशिष्ट-शोधन की व्यवस्था और नियमित निगरानी का अनुरोध करें। नमूने के लिए नगर और प्रेषक का सामान्य परिचय दिया जा सकता है।

चरण 2: संपूर्ण नमूना पत्र 24, नदी विहार

नगर क

10 मार्च, 2008

सेवा में,

मुख्य अधिकारी

प्रदूषण-नियंत्रण-विभाग

नगर क

विषय : औद्योगिक संस्थान के गंदे पानी से नदी के प्रदूषित होने के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे क्षेत्र में नदी के निकट स्थित एक औद्योगिक संस्थान का गंदा पानी नाले के माध्यम से सीधे नगर की नदी में छोड़ा जा रहा है। इससे नदी का जल दूषित हो रहा है और आसपास के निवासियों को परेशानी हो रही है।

नदी नगर की महत्वपूर्ण प्राकृतिक संपदा है। दूषित पानी के संपर्क में आने वाले लोगों के स्वास्थ्य तथा नदी के जलीय जीवन को खतरा हो सकता है। नदी-तट पर रहने वाले परिवारों और इस जल का उपयोग करने वालों के हित में समस्या का शीघ्र समाधान आवश्यक है।

आपसे अनुरोध है कि विभाग की जाँच-टीम भेजकर संस्थान के अपशिष्ट और नदी के पानी के नमूनों की जाँच कराई जाए। संस्थान को बिना शोधन गंदा पानी छोड़ने से रोका जाए तथा उपयुक्त अपशिष्ट-शोधन व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया जाए। नियमों का

उल्लंघन पाए जाने पर आवश्यक कार्रवाई की जाए। साथ ही, नदी के जल की नियमित जाँच और निगरानी की व्यवस्था भी की जाए।

आशा है कि आप इस गंभीर समस्या पर शीघ्र ध्यान देकर नदी और नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए उचित कदम उठाएँगे।

धन्यवाद।

भवदीय

क. ख. ग.

निवासी, नदी विहार

चरण 3: निष्कर्ष इस पत्र में नदी-प्रदूषण की समस्या, उससे जुड़ी चिंता और विभाग से अपेक्षित जाँच तथा रोकथाम की कार्रवाई औपचारिक एवं विनम्र भाषा में स्पष्ट की गई है।

त्वरित सुझाव: शिकायत के साथ ठोस अनुरोध भी लिखें—यहाँ पानी की जाँच, बिना शोधन निकासी पर रोक और नियमित निगरानी पत्र के आवश्यक बिंदु हैं।

अथवा

4. 'स्टिंग ऑपरेशन' खोजी पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण अंग है, पर इसका निजी जीवन में दख़ल भी बढ़ता जा रहा है । इस विषय पर अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र किसी सार्वजनिक विषय पर अपना दृष्टिकोण रखने का औपचारिक माध्यम है। इसमें विषय स्पष्ट, तर्क संतुलित और भाषा विनम्र होनी चाहिए।
- खोजी पत्रकारिता का उद्देश्य जनहित में छिपे तथ्य उजागर करना है। स्टिंग ऑपरेशन की उपयोगिता बताते समय व्यक्तिगत निजता के सम्मान और प्रमाणों की विश्वसनीयता का ध्यान रखना आवश्यक है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप तय कीजिए पहले प्रेषक का पता और दिनांक लिखिए। फिर संपादक का पद, समाचार-पत्र का नाम और पता, विषय तथा संबोधन दीजिए। मुख्य भाग में समस्या, अपना पक्ष और सुझाव रखिए। अंत में प्रकाशन का अनुरोध, धन्यवाद, समापन और प्रेषक का नाम लिखिए।

चरण 2: विचारों को संतुलित क्रम दीजिए स्टिंग ऑपरेशन से भ्रष्टाचार और सार्वजनिक पदों के दुरुपयोग का पर्दाफाश हो सकता है। इसके साथ ही सनसनी फैलाने के लिए निजी जीवन में प्रवेश करने, भ्रामक संपादन करने और अपुष्ट आरोप दिखाने के दुष्परिणाम बताइए। समाधान के रूप में जनहित की कसौटी, तथ्यों का सत्यापन और संपादकीय उत्तरदायित्व सुझाइए। केवल पक्ष या विपक्ष में नारा देने के बजाय दोनों पक्षों पर विचार कीजिए।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र लिखिए 24, विकास नगर
नई दिल्ली
दिनांक: 29 मार्च, 2008

सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जनवाणी,
नई दिल्ली।

विषय: स्टिंग ऑपरेशन में जनहित और निजता के संतुलन के संबंध में।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं स्टिंग ऑपरेशन के बढ़ते प्रयोग पर अपने विचार रखना चाहता हूँ। खोजी पत्रकारिता ने

भ्रष्टाचार तथा सार्वजनिक पदों के दुरुपयोग को उजागर करके समाज को जागरूक किया है। जहाँ सामान्य तरीकों से सच सामने नहीं आ पाता, वहाँ जिम्मेदारी से किया गया स्टिंग ऑपरेशन उपयोगी हो सकता है।

किंतु दर्शक संख्या बढ़ाने के लिए किसी के निजी जीवन को तमाशा बना देना उचित नहीं है। जनहित से असंबद्ध निजी बातचीत या पारिवारिक प्रसंग सार्वजनिक करने से व्यक्ति की गरिमा आहत होती है। अधूरे दृश्य, भ्रामक संपादन और अपुष्ट आरोप निर्दोष व्यक्ति की प्रतिष्ठा भी नष्ट कर सकते हैं। पत्रकारिता की विश्वसनीयता भी इससे घटती है।

मेरे विचार में ऐसे अभियान का आधार स्पष्ट जनहित होना चाहिए। सामग्री प्रकाशित करने से पहले तथ्यों की स्वतंत्र जाँच की जाए और संबंधित पक्ष को अपना स्पष्टीकरण देने का अवसर मिले। निजता में अनावश्यक हस्तक्षेप रोकने के लिए समाचार संस्थान स्पष्ट आचार-संहिता अपनाएँ तथा उसके पालन की संपादकीय समीक्षा करें।

आशा है, आप इस विषय को अपने पत्र में स्थान देकर जिम्मेदार पत्रकारिता पर सार्थक चर्चा को प्रोत्साहित करेंगे।

धन्यवाद।
भवदीय,
अमन कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र का केंद्रीय दृष्टिकोण यह है कि जनहित में सत्य उजागर करने वाला स्टिंग ऑपरेशन उपयोगी है, किंतु सनसनी के लिए निजता का उल्लंघन अनुचित है। प्रमाण, निष्पक्षता और संपादकीय जिम्मेदारी इसके आवश्यक आधार होने चाहिए।

त्वरित सुझाव: इस पत्र में उपयोगिता, निजता पर खतरा और व्यावहारिक सुझाव को अलग अनुच्छेदों में रखिए; इससे आपका दृष्टिकोण संतुलित और स्पष्ट बनेगा।

5(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : 'प्रिंट माध्यम' से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट माध्यम जनसंचार का मुद्रित रूप है। इसमें सूचनाएँ और विचार कागज पर छापकर पाठकों तक पहुँचाए जाते हैं।
- समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें मुद्रित माध्यम के प्रमुख उदाहरण हैं। इनकी सामग्री पढ़ी जाती है।

चरण 1: माध्यम की पहचान कीजिए यहाँ माध्यम से आशय सूचना पहुँचाने के साधन से है। प्रिंट माध्यम में अक्षरों, चित्रों और अन्य सामग्री को छापकर प्रस्तुत किया जाता है।

चरण 2: उदाहरणों से अर्थ स्पष्ट कीजिए दैनिक समाचार-पत्र और मासिक पत्रिका में समाचार या विचार मुद्रित रूप में मिलते हैं। रेडियो की तरह सुनना या टेलीविजन की तरह प्रसारण देखना इसकी मुख्य प्रक्रिया नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सूचनाओं, विचारों और समाचारों को कागज पर छापकर जनसाधारण तक पहुँचाने वाले साधन प्रिंट माध्यम कहलाते हैं; जैसे समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में छपाई और पाठकों तक सूचना पहुँचाने का उल्लेख कर समाचार-पत्र का एक उदाहरण दीजिए।

5(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : स्तंभ-लेखन का क्या तात्पर्य है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र या पत्रिका में नियमित रूप से निश्चित स्थान पर प्रकाशित लेखन स्तंभ-लेखन कहलाता है।
- स्तंभ में लेखक किसी विषय या समसामयिक घटना पर अपने विचार और विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उसकी विशिष्ट शैली इसकी पहचान बनती है।

चरण 1: नियमितता को पहचानिए स्तंभ प्रायः निर्धारित शीर्षक और निश्चित स्थान पर नियमित अंतराल से प्रकाशित होता है। पाठक उस स्थान पर लेखक के अगले लेख की अपेक्षा करते हैं।

चरण 2: लेखन की प्रकृति स्पष्ट कीजिए स्तंभकार राजनीति, समाज, खेल या किसी अन्य विषय पर अपनी दृष्टि प्रस्तुत कर सकता है। केवल घटना की सूचना देने के साथ-साथ उसका विश्लेषण और निजी टिप्पणी इस लेखन की विशेषता है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-पत्र या पत्रिका के निश्चित स्तंभ में नियमित रूप से किसी लेखक द्वारा समसामयिक विषयों पर विचार और टिप्पणियाँ प्रस्तुत करना स्तंभ-लेखन है।

त्वरित सुझाव: स्तंभ-लेखन की पहचान के लिए नियमित प्रकाशन, निश्चित स्थान और लेखक के दृष्टिकोण को साथ याद रखिए।

5(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : संपादकीय में लेखक का नाम क्यों नहीं दिया जाता ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर समाचार-पत्र की नीति और संस्थागत दृष्टिकोण व्यक्त करता है।
- संपादकीय को किसी एक व्यक्ति का निजी मत न मानकर संपादकीय संस्था की राय माना जाता है।

चरण 1: संपादकीय की भूमिका समझिए संपादकीय में समाचार या सार्वजनिक समस्या की समीक्षा करके समाचार-पत्र अपना पक्ष रखता है। उसका उद्देश्य उस विषय पर पाठकों के सामने संस्थागत राय और तर्क प्रस्तुत करना है।

चरण 2: नाम न देने का कारण बताइए इसे संपादक या संपादकीय सहयोगी लिख सकता है, किंतु प्रकाशित विचारों की जिम्मेदारी समाचार-पत्र की होती है। इसलिए इसे व्यक्तिगत लेख की तरह लेखक के नाम से प्रस्तुत नहीं किया जाता।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय में लेखक का नाम इसलिए नहीं दिया जाता क्योंकि वह किसी व्यक्ति के निजी विचारों के बजाय समाचार-पत्र की नीति और उसके संपादक मंडल के सामूहिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय व्यक्तिगत लेखक और समाचार-पत्र की संस्थागत राय का अंतर स्पष्ट कीजिए।

5(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : हिन्दी में प्रकाशित होने वाले किन्हीं चार राष्ट्रीय समाचार-पत्रों के नाम लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र समाचारों, विचारों और सार्वजनिक सूचनाओं के नियमित प्रकाशन का मुद्रित माध्यम है।
- यहाँ हिंदी में प्रकाशित होने वाले राष्ट्रीय समाचार-पत्रों के चार नाम देने हैं; पत्रिका या अंग्रेजी समाचार-पत्र का नाम नहीं देना है।

चरण 1: भाषा और प्रकाशन का प्रकार जाँचिए ऐसे प्रकाशन चुनिए जो हिंदी समाचार-पत्र के रूप में पहचाने जाते हों। राष्ट्रीय समाचार-पत्र विभिन्न क्षेत्रों के पाठकों तक देश-विदेश की खबरें और राष्ट्रीय विषयों की जानकारी पहुँचाते हैं।

चरण 2: चार उपयुक्त उदाहरण चुनिए दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, नवभारत टाइम्स और हिंदुस्तान हिंदी के प्रमुख समाचार-पत्र हैं। इन चारों के नाम प्रश्न में माँगी गई सूची के रूप में लिखे जा सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष चार हिंदी राष्ट्रीय समाचार-पत्र हैं: दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, नवभारत टाइम्स और हिंदुस्तान।

त्वरित सुझाव: ठीक चार अलग समाचार-पत्रों के पूरे नाम लिखिए; किसी पत्रिका या समाचार चैनल को सूची में न जोड़िए।

5(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : अंशकालिक संवाददाता किसे कहा जाता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संवाददाता अपने क्षेत्र से समाचार एकत्र करके समाचार संस्था को भेजता है।
- अंशकालिक संवाददाता किसी समाचार संस्था के लिए पूर्णकालिक कर्मचारी की तरह काम नहीं करता, बल्कि आंशिक समय में समाचार भेजता है।

चरण 1: कार्य की अवधि पहचानिए अंशकालिक शब्द कार्य में दिए जाने वाले सीमित समय को बताता है। ऐसा संवाददाता किसी स्थान या क्षेत्र की घटनाओं की सूचना देता है, पर समाचार संस्था के लिए पूरे समय कार्यरत नहीं रहता।

चरण 2: पारिश्रमिक और भूमिका स्पष्ट कीजिए उसे सामान्यत: भेजे या प्रकाशित समाचारों के आधार पर पारिश्रमिक मिलता है। वह अपने अन्य कार्य के साथ भी संवाददाता का दायित्व निभा सकता है। ऐसे संवाददाता को स्ट्रिंगर भी कहा जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष जो संवाददाता किसी समाचार संस्था के लिए आंशिक समय में समाचार जुटाकर भेजता है और सामान्यत: समाचारों के आधार पर पारिश्रमिक पाता है, उसे अंशकालिक संवाददाता या स्ट्रिंगर कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में आंशिक समय में समाचार भेजना मुख्य पहचान है; केवल कम वेतन मिलना इसकी परिभाषा नहीं है।

---

6. 'कृषकों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति' अथवा 'शहरों का दमघोंटू वातावरण' विषय पर लगभग 150 शब्दों में एक फ़ीचर का आलेख तैयार कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय को मानवीय अनुभव, रोचक आरंभ और संवेदनशील भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करता है। इसमें विषय का विश्लेषण और पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करने वाला अंत होता है।
- आकर्षक शीर्षक और विषयानुकूल अनुच्छेद रखें। बिना स्रोत के आँकड़े अथवा किसी वास्तविक व्यक्ति के नाम से कथन न गढ़ें। नीचे अभ्यास के लिए दोनों विषयों के लगभग 150 शब्दों के नमूने दिए गए हैं।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति तय करें पहले विषय में खेत और किसान की चिंता से शुरुआत करें; फिर कृषि की अनिश्चितता, लागत, कर्ज, पारिवारिक दबाव तथा सहायता की आवश्यकता सामने रखें। दूसरे विषय में शहरी सुबह के दृश्य से आरंभ करके प्रदूषण, उसका स्वास्थ्य पर प्रभाव और सुधार के उपाय लिखें। दोनों फ़ीचरों की भाषा सहज और चित्रात्मक हो; घटनाओं की केवल सूची देने के स्थान पर उनके मानवीय प्रभाव को उभारें।

चरण 2: पहले विषय पर नमूना फ़ीचर लिखें **अन्नदाता की आँखों में बुझती उम्मीद**

खेत की मेड़ पर खड़ा किसान बादलों को ताकता है। उसकी आँखों में फसल के साथ बच्चों की पढ़ाई और घर के खर्च की चिंता भी तैरती है। देश का पेट भरने वाला अन्नदाता जब अपने भविष्य से निराश होने लगे, तो यह पूरे समाज के लिए गंभीर चेतावनी है।

खेती की बढ़ती लागत, मौसम की अनिश्चितता और उपज का उचित मूल्य न मिलना उसकी कठिनाइयाँ बढ़ाते हैं। कर्ज का बोझ तथा परिवार की जिम्मेदारियाँ कई बार उसे अकेला और असहाय महसूस कराती हैं। संकट केवल आर्थिक नहीं रहता; वह मन और रिश्तों को भी प्रभावित करता है।

किसानों तक सस्ता ऋण, सिंचाई, बीमा और समय पर सहायता पहुँचना आवश्यक है। गाँव में भरोसेमंद संवाद और मानसिक स्वास्थ्य सहयोग भी उपलब्ध होना चाहिए। कठिन समय में साथ खड़ा समुदाय आशा लौटाता है। किसान को दया नहीं, सम्मान और सुरक्षा चाहिए। उसकी जिंदगी बचाना हमारे साझा भविष्य को बचाना है।

चरण 3: दूसरे विषय पर नमूना फ़ीचर लिखें **शहर की साँसों पर धुएँ का पहरा**

सुबह की सैर पर निकलिए तो ताजी हवा के बजाय धुएँ की गंध स्वागत करती है। सड़क पर वाहनों की लंबी कतार है और फुटपाथ पर

धूल की परत। चमकती इमारतों के बीच शहर जैसे खुलकर साँस लेना भूल गया है।

वाहनों और कारखानों का धुआँ, निर्माण की धूल तथा कूड़ा जलाने की आदत हवा को दूषित करते हैं। घटते पेड़ और सिकुड़ते खुले मैदान इस संकट को बढ़ाते हैं। बच्चों का खेलना और बुजुर्गों का टहलना कठिन हो जाता है। आँखों में जलन, खाँसी और थकान रोजमर्रा के अनुभव बनते जा रहे हैं।

समाधान केवल खिड़कियाँ बंद करने में नहीं है। भरोसेमंद सार्वजनिक परिवहन, उत्सर्जन की निगरानी, निर्माण स्थलों पर धूल नियंत्रण और कचरे का उचित निपटान आवश्यक हैं। नागरिक भी अनावश्यक वाहन प्रयोग घटाएँ और पेड़ों की रक्षा करें। विकास का अर्थ ऊँची इमारतों के साथ स्वस्थ जीवन भी है। शहर तभी रहने योग्य होगा, जब उसकी हवा राहत देगी।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों नमूनों में दृश्यात्मक आरंभ, समस्या का मानवीय पक्ष और समाधान की दिशा दी गई है। परीक्षा में निर्देशानुसार किसी एक विषय का फ़ीचर लिखना है; ऊपर दोनों विकल्पों के पूर्ण नमूने प्रस्तुत हैं।

त्वरित सुझाव: किसान वाले फ़ीचर में चिंता से सहायता तक और शहर वाले फ़ीचर में प्रदूषित सुबह से स्वच्छ हवा के उपायों तक बढ़ें; शीर्षक ऐसा रखें जो विषय का मानवीय पक्ष तुरंत सामने लाए।

7(क). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ ॥
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ ॥

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि और रचना का परिचय, कथन की परिस्थिति, पंक्तियों का अर्थ तथा काव्यगत विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं।
- तुलसीदास यहाँ जातिगत अहंकार और सामाजिक निंदा के सामने अपनी निर्भीकता व्यक्त करते हैं। उनकी पहचान राम के भक्त की है और उनका आदर्श संतोषपूर्ण, अनासक्त जीवन है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग स्पष्ट करें प्रस्तुत काव्यांश गोस्वामी तुलसीदास की रचना 'कवितावली' से लिया गया है। इसमें कवि अपने प्रति किए जाने वाले जाति और सामाजिक प्रतिष्ठा संबंधी आक्षेपों का उत्तर देते हैं। लोग उन्हें किसी भी नाम से पुकारें, वे उन टिप्पणियों से विचलित नहीं होते। राम के प्रति समर्पण उनके आत्मविश्वास का आधार है।

चरण 2: पहली दो पंक्तियों का भाव समझाएँ तुलसी कहते हैं कि कोई मुझे धूर्त कहे या अवधूत अर्थात विरक्त साधु कहे, राजपूत कहे या जुलाहा कहे, मुझे इसकी चिंता नहीं है। समाज के दिए हुए इन नामों से उनकी वास्तविक पहचान नहीं बदलती। उन्हें न किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह करना है, न किसी की जाति बिगाड़नी है। विवाह-संबंध और जातिगत शुद्धता को लेकर गर्व करने वालों पर इस कथन में व्यंग्य है। कवि कहना चाहते हैं कि जब उनका ऐसे सामाजिक संबंधों से कोई प्रयोजन ही नहीं है, तब दूसरों को उनकी जाति की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: अंतिम दो पंक्तियों का भाव खोलें कवि की प्रसिद्ध पहचान यह है कि वे राम के सेवक हैं। जिसे जो कहना अच्छा लगे, वह कहता रहे; उनके लिए प्रभु से संबंध ही सबसे महत्त्वपूर्ण है। वे माँगकर भोजन कर लेंगे और मस्जिद में सो रहेंगे। इससे उनकी सीमित आवश्यकताओं, संतोष और धार्मिक संकीर्णता से मुक्त दृष्टि का परिचय मिलता है। 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' का भाव है कि उन्हें सांसारिक लेन-देन और स्वार्थपूर्ण संबंधों से कोई सरोकार नहीं है। वे लोभ अथवा सामाजिक प्रतिष्ठा के दबाव में अपनी स्वतंत्रता छोड़ना नहीं चाहते।

चरण 4: काव्य-सौंदर्य बताएँ काव्यांश में ब्रजभाषा के सहज और लोकप्रचलित रूप हैं। 'कहौ' की पुनरावृत्ति कथन को लय और दृढ़ता देती है। 'काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब' जैसी उक्ति तत्कालीन जातिगत आग्रहों पर तीखा व्यंग्य करती है। 'माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो' में संतोष, फक्कड़पन और निर्भीकता एक साथ प्रकट होते हैं। भाषा सीधी है, किंतु उसके भीतर सामाजिक रूढ़ियों का विरोध

और भक्ति से प्राप्त आत्मबल निहित है।

चरण 5: निष्कर्ष इन पंक्तियों में तुलसीदास रामभक्ति को अपनी सर्वोपरि पहचान बताते हुए जातिगत भेद, निंदा और सांसारिक लोभ की उपेक्षा करते हैं। संतोष तथा आत्मसम्मान से जीने की उनकी दृढ़ता काव्यांश का केंद्रीय भाव है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या को दो युग्मों में बाँटें: पहली दो पंक्तियों में जाति और निंदा की उपेक्षा, अंतिम दो में रामभक्ति और संतोष। 'मसीत' तथा 'लैबोको एकु' का भाव स्पष्ट करना न भूलें।

7(ख). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया —
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया —
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल ।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि और कविता का परिचय देकर प्रसंग, पंक्तियों का भाव तथा प्रमुख काव्यगत विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं।
- यहाँ बादल क्रांति का प्रतीक है। प्रकृति में वर्षा से होने वाला नवजीवन सामाजिक जीवन में शोषितों के जागरण और परिवर्तन की आशा से जुड़ता है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग स्पष्ट कीजिए प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'बादल राग' से लिया गया है, जो पाठ्यपुस्तक 'आरोह' में संकलित है। कवि बादल को विप्लव अर्थात क्रांति के प्रतीक के रूप में संबोधित करता है। इन पंक्तियों में बादलों की गर्जना से धरती के भीतर सोए अंकुरों के जागने का चित्र है। इसके माध्यम से दुखी और शोषित लोगों के मन में नए जीवन की आशा जागने का भाव प्रकट हुआ है।

चरण 2: बादल के क्रांतिकारी रूप का अर्थ खोलिए हवा के विशाल समुद्र पर बादल की युद्ध-नौका तैर रही है। क्षणिक और अस्थिर सुख पर दुख की छाया पड़ रही है। संसार का हृदय दुखों से झुलसा हुआ है; उस पर क्रांति का व्यापक प्रभाव छा रहा है। 'निर्दय विप्लव' उस परिवर्तन की तीव्रता का सूचक है जो पुरानी, शोषणपूर्ण व्यवस्था को झकझोर देता है। बादल की 'रण-तरी' संघर्ष के लिए तैयार नौका है और उसमें पीड़ित जनता की अनेक आकांक्षाएँ भरी हैं। कवि ने बादल को केवल वर्षा करने वाली प्राकृतिक सत्ता के रूप में नहीं, अन्यायपूर्ण व्यवस्था के परिवर्तन की शक्ति के रूप में देखा है।

चरण 3: अंकुरों के जागरण का आशय समझाइए बादल की गर्जना युद्ध की भेरी की तरह सुनाई देती है। उसकी ध्वनि से पृथ्वी के हृदय में सोए हुए अंकुर सजग हो उठते हैं। उन्हें विश्वास है कि वर्षा आएगी और वे धरती को फोड़कर बाहर निकलेंगे। इसलिए वे सिर उठाकर जीवन की नई आशा के साथ बादल की ओर देख रहे हैं। ये अंकुर उन दबे-कुचले लोगों के भी प्रतीक हैं जिनकी विकास की संभावनाएँ प्रतिकूल परिस्थितियों में दबी हुई हैं। क्रांति का आह्वान उन्हें चेतना, साहस और बेहतर भविष्य की आशा देता है। इस प्रकार विनाशकारी दिखने वाली गर्जना उनके लिए सृजन और मुक्ति का संदेश है।

चरण 4: काव्य-सौन्दर्य पहचानिए 'समीर-सागर' और 'रण-तरी' में रूपकात्मक कल्पना है। बादल क्रांति तथा सुप्त अंकुर शोषित जन

की जागती चेतना के प्रतीक हैं। अंकुरों का सजग होना, सिर उठाना और आशा से देखना मानवीकरण को प्रभावी बनाता है। भेरी और गर्जन का ध्वनि-बिंब संघर्ष का वातावरण बनाता है। मुक्तछंद, ओजपूर्ण शब्दावली और बादल को सीधा संबोधन कविता की आह्वानात्मक शक्ति बढ़ाते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष काव्यांश में निराला ने बादल के माध्यम से क्रांति का स्वागत किया है। उसके प्रचंड रूप में पीड़ित जनता अपनी मुक्ति, जागरण और नए जीवन की संभावना देखती है। प्रकृति का नवसृजन यहाँ सामाजिक परिवर्तन की आशा बन गया है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में बादल को क्रांति और सुप्त अंकुरों को जागते शोषित जन से जोड़िए; साथ में वर्षा से अंकुर फूटने का प्रत्यक्ष प्राकृतिक अर्थ भी स्पष्ट कीजिए।

7(ग). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ !

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मपरक कविता में कवि अपने अनुभव और मन की स्थितियों के माध्यम से व्यक्तित्व का परिचय देता है। यहाँ उल्लास और विषाद साथ-साथ उपस्थित हैं।
- सप्रसंग व्याख्या में संदर्भ, प्रसंग, भावार्थ और शिल्प को अलग-अलग स्पष्ट करते हुए प्रत्येक बात का आधार दी हुई पंक्तियों में खोजना चाहिए।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग बताइए प्रस्तुत पंक्तियाँ हरिवंश राय बच्चन की कविता 'आत्म-परिचय' से ली गई हैं, जो पाठ्यपुस्तक 'आरोह' में संकलित है। इस कविता में कवि अपने प्रेमपूर्ण, संवेदनशील और स्वतंत्र व्यक्तित्व का परिचय देता है। इस अंश में वह बताता है कि उसके जीवन में यौवन का उत्साह होते हुए भी अंतरमन में उदासी है। बाहर से दिखने वाला हँसमुख रूप उसके भीतर की पूरी स्थिति प्रकट नहीं करता। प्रिय की स्मृति में मिलने वाला सुख और उससे उठने वाली पीड़ा एक साथ उसके जीवन का हिस्सा हैं।

चरण 2: उन्माद और अवसाद का संबंध समझाइए कवि कहता है कि वह यौवन की मस्ती, उमंग और प्रेम की प्रबल अनुभूति को अपने साथ लिए चलता है। 'उन्माद' यहाँ यौवन के उल्लास और भावावेग का सूचक है; इसे केवल असंतुलित व्यवहार के अर्थ में नहीं समझना चाहिए। किंतु इस मस्ती के भीतर 'अवसाद' अर्थात विषाद भी छिपा है। जीवन में आनंद और दुख दो अलग-अलग खानों में नहीं बँटे हैं। कवि की प्रसन्नता के भीतर ही एक निजी पीड़ा मौजूद है। इस द्वंद्व को स्वीकार करते हुए वह अपने भीतर की जटिल भावस्थिति का सच्चा परिचय देता है।

चरण 3: स्मृति से मिलने वाले सुख और दुख को स्पष्ट कीजिए किसी प्रिय की याद कवि के साथ निरंतर बनी हुई है। उस स्मृति का मधुर पक्ष उसके चेहरे पर हँसी ला देता है, लेकिन वही स्मृति भीतर विरह और अभाव की वेदना जगाती है। इसीलिए वह बाहर हँसते हुए भी अंदर रोता है। 'हाय' शब्द उसके मन की कसक को तीव्र करता है। 'किसी की याद' में व्यक्ति का नाम बताना आवश्यक नहीं है; पंक्तियों का केंद्र उस प्रिय स्मृति का प्रभाव है। कवि अपनी वेदना को पूरी तरह छोड़ नहीं पाता, क्योंकि उसी में उसके प्रेम और आत्मीयता का मूल्य भी सुरक्षित है।

चरण 4: काव्यगत विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए 'उन्माद' के साथ 'अवसाद' तथा बाहर हँसने के साथ भीतर रोने में विरोधाभास का सौन्दर्य है। ये विपरीत दिखती अनुभूतियाँ वास्तव में मनुष्य के संवेदनशील मन में एक साथ रह सकती हैं। 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति गीतात्मक लय तथा भावों की निरंतरता व्यक्त करती है। प्रथम पुरुष का प्रयोग आत्मस्वीकार का स्वर देता है। सरल, आत्मीय भाषा और 'हाय' का उद्गार पीड़ा को सहज रूप से संप्रेषित करते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष कवि के व्यक्तित्व में यौवन का उल्लास और प्रिय की स्मृति से उत्पन्न विषाद साथ-साथ हैं। बाहरी हँसी के पीछे छिपी

आंतरिक वेदना इस अंश का केंद्रीय भाव है; इसी द्वंद्व से उसके आत्म-परिचय की संवेदनशीलता प्रकट होती है।

त्वरित सुझाव: 'उन्माद–अवसाद' और 'बाहर हँसी–भीतर रुलाई' के जोड़ों को प्रिय की स्मृति से जोड़कर समझाइए; किसी व्यक्ति का नाम या अप्रमाणित जीवन-प्रसंग न जोड़िए।

8. निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने ? [6 अंक]

8(क). काव्यांश के कथ्य के सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथ्य का सौन्दर्य कविता के मूल विचार और उसकी संवेदना में होता है। यहाँ कविता की कल्पना और अनुभूति की असीम उड़ान का चित्रण है।
- चिड़िया की भौतिक उड़ान को आधार बनाकर कविता की व्यापकता समझाई गई है; 'बाहर भीतर' और 'इस घर, उस घर' उसके विस्तार का संकेत हैं।

चरण 1: उड़ान के प्रतीक में निहित विचार समझिए कविता कल्पना की ऐसी उड़ान है जो भौतिक सीमाओं से बँधी नहीं है। चिड़िया पंखों के सहारे आकाश में उड़ती है, पर उसकी उड़ान का क्षेत्र सीमित है। कविता भावों और कल्पना के पंखों से ऐसे अनुभवों तक पहुँच सकती है जिन्हें चिड़िया नहीं जान सकती। इसलिए चिड़िया का परिचित बिंब कविता की असीम संभावना समझाने का सुंदर माध्यम बनता है।

चरण 2: भीतर-बाहर और घरों के संबंध को स्पष्ट कीजिए 'बाहर भीतर' से बाहरी संसार और मन के आंतरिक संसार तक कविता की पहुँच व्यक्त होती है। 'इस घर, उस घर' बताता है कि वह किसी एक व्यक्ति या घर तक सीमित नहीं रहती; अलग-अलग लोगों के अनुभवों से संबंध बनाती है। इस प्रकार साधारण चिड़िया की उड़ान के बहाने मानवीय अनुभूति की व्यापकता का सहज और प्रभावी चित्र प्रस्तुत हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष कथ्य का सौन्दर्य कविता की असीम कल्पनाशक्ति और मानवीय संवेदना के विस्तार में है। वह बाहरी-भीतरी संसार तथा अलग-अलग घरों की सीमाएँ पार कर लोगों के अनुभवों को जोड़ती है।

त्वरित सुझाव: कथ्य पूछे जाने पर 'कविता की असीम उड़ान' को केंद्र में रखिए और 'बाहर भीतर' तथा 'इस घर, उस घर' से उसका प्रमाण दीजिए।

8(ख). इन पंक्तियों की भाषागत विशेषताओं की चर्चा कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषागत विशेषताओं में शब्दों की प्रकृति, वाक्य-विन्यास, बिंब, अलंकार और लय का उल्लेख उदाहरण सहित किया जाता है।
- इन पंक्तियों की सहज भाषा और उड़ान का रूपक कविता की असीम कल्पना को मूर्त बनाते हैं।

चरण 1: शब्द-चयन और अभिव्यक्ति पहचानिए भाषा सरल, सहज और बोलचाल की खड़ी बोली है। 'चिड़िया', 'घर', 'पंख' और 'उड़ान'

जैसे परिचित शब्द गूढ़ विचार को समझने योग्य बनाते हैं। 'बाहर भीतर' तथा 'इस घर, उस घर' जैसे छोटे पदबंध कविता की व्यापक पहुँच का संकेत देते हैं। 'चिड़िया क्या जाने?' का प्रश्नात्मक प्रयोग उत्तर की अपेक्षा कविता की उड़ान की अनोखी शक्ति पर बल देता है।

चरण 2: रूपक और लय का प्रभाव बताइए 'कविता एक उड़ान है' में कविता पर उड़ान का आरोप होने से रूपक है। 'कविता के पंख' भी कल्पना के विस्तार को दृश्य रूप देते हैं। 'चिड़िया क्या जाने' की आवृत्ति कथ्य को उभारती है और लय पैदा करती है। 'बहाने', 'जाने' और 'माने' की ध्वनि-समानता संगीतात्मकता लाती है। पंक्तियाँ मुक्तछंद में हैं; छोटी-बड़ी पंक्तियों का विन्यास विचार की स्वच्छंद गति के अनुरूप है।

चरण 3: निष्कर्ष सहज खड़ी बोली, परिचित शब्द, उड़ान-पंख का रूपक, प्रश्नात्मक शैली, आवृत्ति और मुक्तछंद की लय इन पंक्तियों की मुख्य भाषागत विशेषताएँ हैं। ये कविता की असीम कल्पनाशक्ति को सरल किंतु प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करती हैं।

त्वरित सुझाव: हर भाषागत विशेषता के साथ अंश का छोटा उदाहरण दीजिए, जैसे रूपक के लिए 'कविता एक उड़ान है' और आवृत्ति के लिए 'चिड़िया क्या जाने'।

8(ग). 'कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने' पंक्ति के भावगत सौन्दर्य पर अपने विचार प्रकट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता की उड़ान कल्पना, अनुभूति और संवेदना के असीम विस्तार का प्रतीक है।
- भावगत सौन्दर्य स्पष्ट करते समय चिड़िया की वास्तविक उड़ान और कविता की कल्पनात्मक उड़ान का अंतर बताना आवश्यक है।

चरण 1: चिड़िया की उड़ान की सीमा समझिए चिड़िया अपने पंखों से आकाश में उड़ती है, किंतु उसकी उड़ान उसकी शारीरिक शक्ति और स्थान की सीमाओं में बँधी रहती है। वह बाहर दिखाई देने वाले संसार में ही उड़ सकती है; मनुष्य के मन की भीतरी अनुभूतियों और कल्पनाओं तक उसकी पहुँच नहीं होती।

चरण 2: कविता की असीमता पहचानिए कविता कल्पना के पंखों से बाहर और भीतर, इस घर और उस घर, सब जगह पहुँचती है। वह मन के सूक्ष्म भावों को व्यक्त करते हुए स्थान और समय की सीमाओं को पार कर जाती है। 'भला चिड़िया क्या जाने' में प्रश्न के माध्यम से इसी असीम रचनात्मक शक्ति पर बल दिया गया है। चिड़िया कविता की उड़ान की प्रेरणा तो बनती है, पर उसके व्यापक अर्थ को नहीं समझ सकती।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति का भावगत सौन्दर्य कविता की सीमा रहित कल्पना और मानवीय संवेदना के विस्तार में है। चिड़िया की सीमित उड़ान से तुलना करके कवि ने कविता की व्यापकता और स्वतंत्रता को प्रभावशाली बनाया है।

त्वरित सुझाव: भावगत सौन्दर्य में केवल अलंकार का नाम न लिखें; चिड़िया की सीमित उड़ान के सामने कविता के बाहरी और भीतरी संसार तक पहुँचने का भाव स्पष्ट करें।

अथवा

8. जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के ख़तरनाक किनारों तक —
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत । [6 अंक]

8(क). "जन्म ..... कपास" पंक्ति में कपास से बच्चों का क्या सम्बन्ध है ? स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में वस्तुओं का उल्लेख उनके गुणों के माध्यम से किसी भाव या विशेषता को व्यक्त करने के लिए होता है।
- यहाँ कपास बच्चों के शरीर की कोमलता, हलकेपन और सहज लचीलेपन का बिंब है।

चरण 1: कपास के गुणों से संबंध जोड़िए 'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास' का आशय यह नहीं है कि बच्चे सचमुच कपास लेकर जन्म लेते हैं। कपास कोमल और हलकी होती है। उसी तरह बच्चों का शरीर स्वभावत: कोमल, हलका और लचीला होता है। कवि ने इन जन्मजात गुणों को कपास के माध्यम से मूर्त रूप दिया है।

चरण 2: बच्चों की गतिविधियों से अर्थ स्पष्ट कीजिए इसी हलकेपन और लचीलेपन के कारण बच्चे उत्साह से दौड़ते, उछलते और पेंग भरते हैं। खेल में डूबे हुए उनके शरीर में कठोरता के स्थान पर सहज लोच दिखाई देती है। आगे आने वाला डाल के समान लचीले वेग का बिंब भी इसी शारीरिक सहजता को पुष्ट करता है। कपास का संबंध बच्चों की निर्भार, कोमल और चंचल बालसुलभ प्रकृति से है।

चरण 3: निष्कर्ष कपास बच्चों की जन्मजात कोमलता और हलके, लचीले शरीर का प्रतीक है। यह बिंब उनकी उत्साहपूर्ण गति और खेल में मुक्त होकर भाग लेने की स्वाभाविक क्षमता को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: कपास का अर्थ खोलते समय उसके कोमल और हलके होने के गुण बच्चों के शरीर से जोड़ें; इसे वास्तविक कपास लेकर जन्म लेने की घटना न मानें।

8(ख). "छतों को भी नरम बनाते हुए" — काव्य-पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति में कठोर छत और बच्चों की कोमल, लचीली गति के बीच विरोध से भाव उभरता है।
- खेल में तन्मयता बच्चों के लिए कठिन और कठोर परिवेश को भी सहज अनुभव में बदल देती है।

चरण 1: कथन का लाक्षणिक अर्थ समझिए 'छतों को भी नरम बनाते हुए' में छतों का वास्तव में नरम होना अभिप्रेत नहीं है। छतें कठोर ही रहती हैं, किंतु बच्चों के कोमल पैरों, हलके शरीर और सहज उछाल से उनकी कठोरता मानो समाप्त हो जाती है। कवि बच्चों की गति का प्रभाव छतों के स्वभाव पर आरोपित करता है।

चरण 2: उत्साह और तन्मयता से जोड़िए पतंग उड़ाने में बच्चे इतने बेसुध और आनंदमग्न हैं कि उन्हें छतों की कठोरता तथा दौड़ने की

कठिनाई का ध्यान नहीं रहता। उनके लिए छत स्वतंत्र होकर दौड़ने और उछलने का सहज खेल-स्थल बन जाती है। यह पंक्ति बचपन के उत्साह, शारीरिक लोच और उस आनंद को व्यक्त करती है जिसमें कठोर परिवेश भी अनुकूल और कोमल प्रतीत होता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्य-पंक्ति का भाव है कि बच्चों की कोमल, लचीली और उमंगभरी गति कठोर छतों को भी मानो नरम बना देती है। खेल में उनकी तन्मयता कठोरता के अनुभव को पीछे छोड़ देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले स्पष्ट करें कि छत सचमुच नहीं बदलती; फिर बच्चों के हलकेपन, लचीलेपन और खेल की तन्मयता से नरम होने का भाव जोड़ें।

8(ग). छतों के ख़तरनाक किनारों से वे कैसे बच पाते हैं ? इस संदर्भ में "डाल की तरह लचीला वेग" कथन का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में शरीर का संगीत बच्चों की सहज गति, स्फूर्ति, लय और संतुलन का रूपक है।
- डाल से तुलना बच्चों की गतिशीलता के साथ उनके शरीर की लोच को स्पष्ट करती है।

चरण 1: गिरने से बचने का काव्यगत कारण बताइए छतों के खतरनाक किनारों तक पहुँच जाने पर बच्चों को उनके 'रोमांचित शरीर का संगीत' गिरने से बचाता है। इसका आशय उनके उत्साहपूर्ण शरीर की सहज लय, फुर्ती और संतुलन से है। दौड़ते और पेंग भरते समय वे अपनी गति के साथ शरीर को ढाल लेते हैं; कवि इसी सहज शारीरिक समन्वय को संगीत कहता है।

चरण 2: डाल की उपमा का सौन्दर्य खोलिए 'डाल की तरह लचीला वेग' में बच्चों की गति की तुलना लचीली डाल से की गई है, इसलिए यहाँ उपमा अलंकार है। डाल झुककर और लहराकर भी अपना संतुलन सँभालती है; उसी तरह बच्चों के शरीर में गति के साथ लोच बनी रहती है। इस दृश्यात्मक तुलना से उनका हलकापन, चंचलता और तेजी से शरीर मोड़ सकने की क्षमता सजीव हो उठती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के अनुसार बच्चों को उनकी रोमांचित देह की लय और सहज संतुलन बचाते हैं। डाल की उपमा उनके वेग की लोच और स्फूर्ति को चित्रात्मक बनाती है तथा शारीरिक समन्वय का सौन्दर्य प्रकट करती है।

त्वरित सुझाव: दोनों माँगें पूरी करें: बचने का कारण शरीर की लय और संतुलन है; डाल की उपमा का सौन्दर्य लचीलापन, गति और सजीव दृश्य में है।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता किसको व क्यों स्वीकारने की प्रेरणा देती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता सुख और दुःख को अलग-अलग चुनने के बजाय जीवन की समग्र अनुभूतियों को स्वीकार करने की प्रेरणा देती है।
- प्रिय के आत्मीय प्रभाव से जुड़ी हुई परिस्थितियाँ और व्यक्तित्वगत विशेषताएँ कवि को स्वीकार्य हैं।

चरण 1: स्वीकार करने योग्य अनुभव पहचानिए कविता जीवन के सुख-दुःख, संघर्ष, अभाव, उपलब्धियों और अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करने की प्रेरणा देती है। कवि की गरीबी, गंभीर अनुभव, विचारों का वैभव, भावनाओं की सरिता, दृढ़ता और मौलिकता इसी जीवन का हिस्सा हैं। वह केवल सुखद अनुभवों को चुनकर कठिन अनुभवों को अस्वीकार नहीं करता।

चरण 2: स्वीकृति का कारण स्पष्ट कीजिए कवि की दृष्टि में उसके जीवन में जो कुछ है, वह उसके आत्मीय प्रिय से जुड़ा हुआ है। कविता में वह इन्हें 'तुम्हें प्यारा है' कहकर स्वीकार करने का कारण देता है। इन अनुभवों पर प्रिय का प्रभाव और स्नेह है तथा इन्हीं से उसका

व्यक्तित्व बना है। इसलिए कठिनाइयाँ भी निरर्थक बोझ नहीं रह जातीं; आत्मीय संबंध उन्हें अर्थ और स्वीकार्यता प्रदान करता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह कविता अपने जीवन की अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों तथा समस्त अनुभवों को सहर्ष स्वीकारने की प्रेरणा देती है, क्योंकि वे प्रिय के स्नेह और प्रभाव से जुड़े हैं और व्यक्तित्व के निर्माण में सहभागी हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में क्या और क्यों अलग रखें: जीवन के समस्त सुख-दुःख स्वीकार करने हैं; उनका प्रिय से आत्मीय संबंध इस स्वीकृति का प्रमुख कारण है।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' काव्यांश के आधार पर भ्रातृशोक में विह्वल राम की दशा को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लक्ष्मण की मूर्च्छा राम के गहरे भ्रातृप्रेम और मानवीय संवेदना को प्रकट करती है।
- विलाप में असहायता, आत्मग्लानि और भाई के बिना जीवन की अपूर्णता व्यक्त होती है।

चरण 1: राम की शोकपूर्ण दशा बताइए लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम अत्यंत व्याकुल और असहाय हो उठते हैं। वे उन्हें हृदय से लगाकर पुकारते हैं और उनके न जागने पर विलाप करते हैं। उन्हें स्मरण आता है कि लक्ष्मण उनका थोड़ा-सा दुःख भी सहन नहीं कर पाते थे तथा उनके लिए माता-पिता और सुख-सुविधाएँ छोड़कर वन में आए थे। ऐसी प्रेममयी सेवा की स्मृति राम के शोक को और गहरा कर देती है।

चरण 2: आत्मग्लानि और अपूर्णता स्पष्ट कीजिए राम कहते हैं कि भाई के वियोग की आशंका पहले होती तो वे पिता का वचन भी न मानते। उन्हें सुमित्रा को उत्तर देने की चिंता और लक्ष्मण की दशा के लिए अपने प्रति अपराध-बोध होता है। वे भाई के बिना स्वयं को पंखहीन पक्षी और मणिहीन सर्प के समान असहाय अनुभव करते हैं। इस क्षण उनका धैर्य टूट जाता है और शोकाकुल भाई का अत्यंत करुण, मानवीय रूप सामने आता है।

चरण 3: निष्कर्ष भ्रातृशोक में राम व्याकुल, निराश और आत्मग्लानि से भर उठते हैं। लक्ष्मण के प्रेम और त्याग को याद करते हुए उन्हें अपना जीवन भाई के बिना असहाय और अपूर्ण प्रतीत होता है।

त्वरित सुझाव: राम की दशा लिखते समय व्याकुलता के साथ पाठ का आधार दें: लक्ष्मण की सेवा-स्मृति, सुमित्रा को उत्तर देने की चिंता और भाई के बिना असहायता।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 'छोटा मेरा खेत' कविता में छोटे चौकोने खेत को 'काग़ज़ का पन्ना' क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने खेती की प्रक्रिया के माध्यम से कविता की रचना-प्रक्रिया को समझाया है। छोटा चौकोना खेत काग़ज़ के पन्ने का प्रतीक है।
- खेत में बीज से अन्न उपजता है; काग़ज़ पर भाव और कल्पना के सहारे शब्दों की फसल अर्थात कविता जन्म लेती है।

चरण 1: आकार और आधार की समानता काग़ज़ का पन्ना छोटे चौकोने खेत जैसा दिखाई देता है। किसान के लिए खेत खेती का आधार है, उसी प्रकार कवि के लिए पन्ना रचना का आधार है। इसलिए यह तुलना केवल आकार की समानता तक सीमित नहीं है; दोनों अपने-अपने सृजन को मूर्त रूप देने का स्थान भी हैं।

चरण 2: खेती और रचना के संबंध को समझिए खेत में पड़ा बीज अनुकूल परिस्थितियों में अंकुरित होकर फसल बनता है। इसी प्रकार कवि के मन में जागा भाव कल्पना और अनुभूति से विकसित होता है तथा शब्दों के रूप में काग़ज़ पर उतरता है। इस पन्ने पर पैदा हुई

कविता पाठकों को आनंद देती रहती है। अत: खेत और पन्ने के संबंध से कवि काव्य-सृजन की पूरी प्रक्रिया को सहज ढंग से व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष छोटे चौकोने खेत को काग़ज़ का पन्ना इसलिए कहा गया है कि उसके आकार के साथ उसकी सृजनात्मक भूमिका भी खेत जैसी है। खेत में अन्न की और पन्ने पर भाव, कल्पना तथा शब्दों से कविता की फसल उपजती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल चौकोने आकार का उल्लेख न करें; खेत में बीज से फसल और पन्ने पर भाव से कविता बनने की समानता भी समझाएँ।

10. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हम आज देश के लिए करते क्या हैं ? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है । अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है । हम चटख़ारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं ? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं । आखिर कब बदलेगी यह स्थिति ? [8 अंक]

10(i). "हम आज देश के लिए करते क्या हैं ? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं ।" — कथन के द्वारा लेखक देशवासियों की किस मानसिकता पर व्यंग्य कर रहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्य का लक्ष्य पहचानने के लिए लेखक द्वारा दिखाए गए व्यवहार के विरोध को समझना चाहिए।
- इस गद्यांश में बड़ी-बड़ी माँगों के सामने त्याग और देश के प्रति कर्तव्य का अभाव रखा गया है।

चरण 1: माँग और योगदान का अंतर पहचानिए लेखक पूछता है कि हम देश के लिए क्या करते हैं, जबकि हर क्षेत्र में हमारी माँगें बहुत बड़ी हैं। इस प्रश्न में उन लोगों की मानसिकता पर व्यंग्य है जो देश से सुविधाएँ और लाभ तो चाहते हैं, लेकिन उसके लिए अपना योगदान देने को तैयार नहीं होते। वे लेने की इच्छा रखते हैं, देने की जिम्मेदारी से बचते हैं।

चरण 2: स्वार्थ और त्याग के अभाव को जोड़िए गद्यांश में कहा गया है कि त्याग का नाम-निशान नहीं है और अपना स्वार्थ ही एकमात्र लक्ष्य रह गया है। इससे स्पष्ट है कि लेखक अधिकारों और लाभों के प्रति सजग, किंतु कर्तव्य तथा त्याग के प्रति उदासीन नागरिकों पर चोट कर रहा है। देश के हित की अपेक्षा अपने लाभ को सर्वोपरि रखना ही इस व्यंग्य का मुख्य आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक देशवासियों की उस स्वार्थी मानसिकता पर व्यंग्य करता है जिसमें वे देश से बड़ी-बड़ी सुविधाएँ और अधिकार चाहते हैं, पर उसके प्रति अपना कर्तव्य निभाने और त्याग करने को तैयार नहीं होते।

त्वरित सुझाव: माँगों और त्याग का विरोध साथ लिखिए; इसी विरोध से लेखक के व्यंग्य का लक्ष्य स्पष्ट होता है।

10(ii). देश के नागरिकों के चरित्र में किस गुण का अभाव है ? उस अभाव का कारण क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के दो पक्ष हैं—चरित्र में अनुपस्थित गुण और उसके अभाव का कारण। दोनों का उत्तर गद्यांश से देना है।
- त्याग का अभाव तथा स्वार्थ का प्रधान होना गद्यांश में सीधे एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

चरण 1: अनुपस्थित गुण पहचानिए लेखक के अनुसार देश के नागरिकों के चरित्र में त्याग की भावना का अभाव है। वे देश से अनेक सुविधाएँ चाहते हैं, किंतु उसके हित में अपने निजी लाभ का कुछ अंश छोड़ने या कर्तव्य निभाने के लिए आगे नहीं आते। गद्यांश का कथन, त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है, इसी कमी को स्पष्ट करता है।

चरण 2: उसका कारण स्पष्ट कीजिए इस अभाव का कारण स्वार्थपरता है। गद्यांश में अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह जाने की बात कही गई है। जब व्यक्ति का ध्यान केवल अपनी माँगों और निजी लाभ पर रहता है, तब देश तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व पीछे छूट जाता है। अपने लाभ को सबसे ऊपर रखना त्याग की भावना को कमजोर करता है; यही लेखक द्वारा बताया गया कारण है।

चरण 3: निष्कर्ष नागरिकों में त्याग की भावना का अभाव है। इसका कारण यह है कि निजी स्वार्थ उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन गया है और देश के प्रति कर्तव्य की भावना पीछे छूट गई है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो स्पष्ट हिस्सों में रखें—गुण का अभाव: त्याग; कारण: अपना स्वार्थ ही एकमात्र लक्ष्य होना।

10(iii). हम किस बात के लिए दूसरों की आलोचना करते हैं ? क्या हम वास्तव में उस आलोचना करने के अधिकारी हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोचना का विषय पहचानने के साथ आलोचक के अपने आचरण की जाँच आवश्यक है।
- लेखक दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा के सामने अपने स्तर पर उसी में भागीदार होने की संभावना रखता है।

चरण 1: आलोचना का विषय बताइए हम दूसरों के भ्रष्टाचार की आलोचना करते हैं। गद्यांश में चटख़ारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करने का उल्लेख है। इससे पता चलता है कि हम दूसरों की बुराई को चर्चा का विषय तो बनाते हैं, पर उतनी तत्परता से अपने आचरण पर विचार नहीं करते। लेखक इसी एकतरफा दृष्टि पर प्रश्न उठाता है।

चरण 2: आलोचना के नैतिक आधार की जाँच कीजिए हमने यह जाँचा ही नहीं कि अपने स्तर और दायरे में हम स्वयं उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं। यदि हमारा व्यवहार भी भ्रष्ट है, तो दूसरों की निंदा करने का नैतिक अधिकार नहीं बनता। इसलिए लेखक पहले आत्मपरीक्षण और अपने आचरण को सुधारने का आग्रह करता है। गद्यांश सभी व्यक्तियों को बिना जाँच दोषी घोषित नहीं करता, बल्कि हमारी संभावित भागीदारी का प्रश्न उठाता है।

चरण 3: निष्कर्ष हम दूसरों के भ्रष्टाचार की आलोचना करते हैं। किंतु अपने आचरण की जाँच किए बिना ऐसा करने का नैतिक आधार कमजोर है; यदि हम स्वयं उसी भ्रष्टाचार में सहभागी हैं, तो उसकी आलोचना करने के अधिकारी नहीं हैं।

त्वरित सुझाव: दूसरों के भ्रष्टाचार का उल्लेख करने के बाद अपने स्तर पर भागीदारी की जाँच जोड़ें; सभी नागरिकों को बिना आधार भ्रष्ट न कहें।

10(iv). नीचे लिखे अंश में निहित अर्थ स्पष्ट कीजिए :

"काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बिंब का निहित अर्थ उसके आसपास के कथनों से स्पष्ट होता है; यहाँ संदर्भ स्वार्थ, भ्रष्टाचार और देश की दशा का है।
- बहुत वर्षा के बावजूद खाली गगरी और प्यासे बैल संसाधनों के होते हुए भी जरूरतों के अधूरा रहने का विरोध दिखाते हैं।

चरण 1: प्रत्यक्ष चित्र का आशय समझिए काले बादल उमड़ते हैं और खूब पानी बरसता है, फिर भी गगरी टूटी होने से उसमें पानी नहीं टिकता तथा बैलों की प्यास नहीं बुझती। इस चित्र में साधन की प्रचुरता और आवश्यकता की पूर्ति न होने का विरोध है। केवल पानी का आ जाना पर्याप्त नहीं; उसका सही ढंग से रुकना और जरूरत तक पहुँचना भी जरूरी है।

चरण 2: गद्यांश के सामाजिक संदर्भ से जोड़िए लेखक का संकेत है कि देश में विकास के साधन और प्रयास होने पर भी स्वार्थ तथा भ्रष्टाचार के कारण उनका लाभ जरूरतमंद लोगों तक नहीं पहुँचता। व्यवस्था की कमियाँ फूटी गगरी जैसी हैं और प्यासे बैल उन लोगों का संकेत हैं जिनकी मूल आवश्यकताएँ अधूरी रहती हैं। जब तक ये कमियाँ दूर नहीं होतीं, साधनों की उपलब्धता भी जनता की दशा में

अपेक्षित सुधार नहीं ला पाती।

चरण 3: निष्कर्ष अंश का निहित अर्थ है कि संसाधन और विकास के प्रयास उपलब्ध होने पर भी भ्रष्टाचार, स्वार्थ तथा व्यवस्था की खामियों के कारण उनका लाभ जनता तक नहीं पहुँचता। फलतः लोगों की मूल जरूरतें अधूरी रह जाती हैं।

त्वरित सुझाव: पहले वर्षा, फूटी गगरी और प्यासे बैलों का विरोध समझाएँ, फिर उसे भ्रष्टाचार के कारण जनता तक लाभ न पहुँचने से जोड़ें।

अथवा

10. शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं । इस चिलकती धूप में इतना इतना सरस वह कैसे बना रहता है ? क्या ये बाह्य परिवर्तन — धूप, वर्षा, आँधी, लू — अपने आप में सत्य नहीं हैं ? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, ख़ून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है ? शिरीष रह सका है । अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था । क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों सम्भव हुआ ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है । [8 अंक]

10(i). शिरीष के वृक्ष की तुलना अवधूत से क्यों की गई है ? यह वृक्ष लेखक में किस प्रकार की भावना जगाता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवधूत बाहरी परिस्थितियों और सांसारिक मोह से अनासक्त रहकर अपने आंतरिक संतुलन में स्थित रहता है।
- शिरीष की सरसता और प्रतिकूल मौसम में स्थिरता के आधार पर उसकी तुलना अवधूत से की गई है।

चरण 1: अवधूत से तुलना का कारण बताइए धूप, वर्षा, आँधी और लू जैसे बाहरी परिवर्तन शिरीष की सरसता को नष्ट नहीं कर पाते। वह कठोर वातावरण में भी अपनी सहज प्रकृति और आंतरिक संतुलन बनाए रखता है। इसी प्रकार अवधूत बाहरी सुख-दुख से विचलित हुए बिना अनासक्त रहता है। दोनों की यह समान विशेषता शिरीष को पक्के अवधूत जैसा बनाती है।

चरण 2: लेखक के मन में उठने वाली भावना बताइए शिरीष लेखक के मन में ऊपर की ओर उठने वाली तरंगें जगाता है। इससे लेखक को प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच भी जीवन की सरसता, उदात्तता और स्थिरता बनाए रखने की प्रेरणा मिलती है। यहाँ ऊपर उठने का अर्थ भावों और विचारों का ऊँचा होना है। लेखक बाहरी संकटों से हारने के बजाय मन की शक्ति और संतुलन बचाए रखने की संभावना अनुभव करता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष बाहरी विपत्तियों से विचलित हुए बिना सरस और स्थिर रहता है, इसलिए उसकी तुलना अवधूत से हुई है। वह लेखक में मन को ऊँचा उठाने वाली उदात्त भावना तथा कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित और सरस रहने की प्रेरणा जगाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों पक्ष अलग रखें—तुलना का आधार अनासक्त स्थिरता है और लेखक पर प्रभाव ऊँचे, उदात्त भावों का जागना है।

10(ii). चिलकती धूप में भी सरस रहने वाला शिरीष हमें क्या प्रेरणा दे रहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति का चित्र यहाँ मानवीय जीवन के लिए प्रेरणा देता है। शिरीष का आचरण ही उत्तर का आधार है।
- चिलकती धूप कठिन परिस्थितियों का संकेत है; सरस बने रहना जीवन के आनंद और आंतरिक संतुलन को सुरक्षित रखना है।

चरण 1: शिरीष के व्यवहार को समझिए चिलकती धूप में भी शिरीष सरस बना रहता है। प्रतिकूल बाहरी वातावरण उसकी सहजता और जीवन के उल्लास को समाप्त नहीं कर पाता। इससे स्पष्ट होता है कि विपत्ति का होना और मन का पूरी तरह हार जाना एक ही बात नहीं

है। कठिनाइयों के बीच भी मनुष्य अपने भीतर की शक्ति को बचा सकता है।

चरण 2: जीवन के लिए प्रेरणा व्यक्त कीजिए शिरीष हमें प्रेरणा देता है कि दुख, संकट और प्रतिकूल परिस्थितियों में निराश होकर जीवन की कोमलता तथा आनंद न खोएँ। हम धैर्य और आंतरिक संतुलन बनाए रखें तथा बाहरी उथल-पुथल के बावजूद अपने उदात्त गुणों को सुरक्षित रखें। इसका आशय कठिनाइयों के अस्तित्व को नकारना नहीं, बल्कि उनके प्रभाव से विचलित हुए बिना दृढ़ता और प्रसन्नता से जीना है।

चरण 3: निष्कर्ष चिलकती धूप में सरस रहने वाला शिरीष हमें संकटों में भी धैर्य, प्रसन्नता और आंतरिक संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देता है। वह सिखाता है कि प्रतिकूल परिस्थितियाँ हमारी जीवन-सरसता और उदात्तता न छीन लें।

त्वरित सुझाव: शिरीष की सरसता को केवल पेड़ की विशेषता न लिखें; उससे मनुष्य के लिए संकट में धैर्य और प्रसन्नता बनाए रखने की सीख निकालें।

10(iii). गद्यांश में देश के ऊपर से किस बवंडर के गुज़रने की ओर संकेत किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्राकृतिक विपत्तियों की तुलना सामाजिक जीवन में फैली हिंसा से की गई है।
- प्रसंग का अर्थ लेखक द्वारा प्रयुक्त मार-काट, अग्निदाह और लूट-पाट जैसे शब्दों से स्पष्ट होता है।

चरण 1: बवंडर के संकेत को पहचानिए यहाँ बवंडर से आशय देश-विभाजन के समय फैले सांप्रदायिक दंगों और हिंसा की भीषण लहर से है। गद्यांश में आए मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट और ख़ून-खच्चर के उल्लेख बताते हैं कि लेखक मनुष्यों द्वारा फैलाए गए विनाश की ओर संकेत कर रहे हैं। यह केवल धूल भरी आँधी या मौसम की कोई घटना नहीं है।

चरण 2: प्रसंग से उसका संबंध समझिए इस हिंसक वातावरण में जनजीवन भय, घृणा और अशांति से भर गया था। लेखक पूछते हैं कि ऐसी परिस्थितियों में भी क्या मनुष्य अपने भीतर शांति और स्थिरता बनाए रख सकता है। इसी प्रश्न को स्पष्ट करने के लिए वे शिरीष की सरसता और देश के एक बूढ़े की अडिगता का उदाहरण देते हैं। इस प्रकार बवंडर बाहरी उथल-पुथल का बिंब है।

चरण 3: निष्कर्ष देश के ऊपर से गुज़रे बवंडर का संकेत देश-विभाजन के समय हुए सांप्रदायिक दंगों, हत्याओं, आगज़नी और लूटपाट की ओर है।

त्वरित सुझाव: बवंडर का अर्थ बताते समय गद्यांश के हिंसासूचक शब्दों को देश-विभाजन के सांप्रदायिक दंगों से जोड़िए।

10(iv). 'अपने देश का एक बूढ़ा' — कौन था ? उस बूढ़े और शिरीष में समानता का आधार लेखक ने क्या माना है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष बाहरी प्रतिकूलताओं के बीच आंतरिक सरसता और निर्लिप्तता बनाए रखने का प्रतीक है।
- अवधूत का स्वभाव मोह, द्वेष और परिस्थितियों के दबाव से ऊपर उठकर सहज बने रहना है।

चरण 1: बूढ़े की पहचान कीजिए गद्यांश में अपने देश का एक बूढ़ा कहकर महात्मा गांधी की ओर संकेत किया गया है। देश में मार-काट और घृणा फैलने पर भी वे सत्य, अहिंसा और मानव-प्रेम के मार्ग पर अडिग रहे। बाहरी हिंसा उनके अंत:करण की करुणा को समाप्त नहीं कर सकी।

चरण 2: समानता का आधार स्पष्ट कीजिए शिरीष तेज धूप, लू और आँधी जैसी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सरस और प्रफुल्ल बना रहता है। गांधीजी भी सांप्रदायिक हिंसा के बीच शांति और प्रेम के आदर्श से विचलित नहीं हुए। दोनों में अवधूत जैसी अनासक्ति, आत्मबल और विषम वातावरण से ऊपर उठने की क्षमता है। यह समानता बाहरी आकार या आयु की नहीं, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में अपने

मूल स्वभाव और मूल्यों को बचाए रखने की है।

चरण 3: निष्कर्ष वह बूढ़ा महात्मा गांधी था। लेखक ने गांधीजी और शिरीष की समानता का आधार उनकी अवधूत जैसी निर्लिप्तता तथा संकट में भी अडिग, शांत और सरस रहने की शक्ति को माना है।

त्वरित सुझाव: पहले महात्मा गांधी का नाम लिखिए, फिर शिरीष की सरसता को गांधीजी के अहिंसक और अविचल स्वभाव से जोड़िए।

11(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी ? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाम और वास्तविक जीवन की असंगति भक्तिन के चरित्र-चित्रण में व्यंग्य तथा करुणा उत्पन्न करती है।
- महादेवी वर्मा ने सेविका के बाहरी धार्मिक रूप को देखकर उसे भक्तिन नाम दिया था।

चरण 1: वास्तविक नाम छिपाने का कारण समझिए भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन था, जो लक्ष्मी का लोकप्रचलित रूप है। लक्ष्मी धन और समृद्धि की देवी मानी जाती हैं, किंतु भक्तिन का जीवन गरीबी, अभाव और संघर्ष में बीता था। नाम के अर्थ और अपनी आर्थिक दशा के इस विरोध के कारण उसे अपना नाम पसंद नहीं था। वह नहीं चाहती थी कि लोग इस असंगति पर हँसें या उसका मज़ाक बनाएँ। इसलिए उसने अपना वास्तविक नाम लोगों से छिपाए रखने का आग्रह किया था।

चरण 2: नए नाम के पीछे का आधार पहचानिए उसे भक्तिन नाम लेखिका महादेवी वर्मा ने दिया था। पहली भेंट के समय उसकी घुटी हुई चाँद, गले की कंठी माला और धार्मिक वेश देखकर लेखिका को उसका रूप किसी भक्त स्त्री जैसा लगा। इसी रूप के अनुरूप उसे भक्तिन कहा गया। यह उसका जन्म का नाम नहीं था, बल्कि लेखिका द्वारा रखा गया ऐसा संबोधन था जिसे उसने स्वीकार कर लिया।

चरण 3: दोनों नामों की अर्थवत्ता जोड़िए लछमिन नाम उसकी वास्तविक निर्धनता के विपरीत समृद्धि का बोध कराता था, जबकि भक्तिन नाम उसके सामने दिखाई देने वाले धार्मिक रूप के अनुकूल था। इसलिए पहले नाम को छिपाने और दूसरे नाम को स्वीकार करने के कारण अलग-अलग स्पष्ट करने चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष निर्धन जीवन और लक्ष्मी-सूचक नाम में विरोध होने के कारण वह लछमिन नाम छिपाती थी। उसकी घुटी चाँद और कंठी माला से प्रभावित होकर महादेवी वर्मा ने उसे भक्तिन नाम दिया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में लछमिन नाम, गरीबी से उसका विरोध, महादेवी वर्मा और कंठी माला सहित धार्मिक रूप अवश्य जोड़िए।

11(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर बताइए कि पैसे की पावर का रस किन दो रूपों में प्राप्त किया जाता है । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार दर्शन में पैसे की पावर का अर्थ धन से प्राप्त क्रयशक्ति और उससे उपजने वाले सामर्थ्य-बोध से है।
- धन के उपभोग और धन के संचय में मिलने वाला अहंकारपूर्ण आनंद पैसे की शक्ति का रस लेने के दो रूप हैं।

चरण 1: खरीदारी द्वारा शक्ति का रस समझिए पहले रूप में मनुष्य अपनी धन-शक्ति का प्रदर्शन तरह-तरह की वस्तुएँ खरीदकर करता है। बाज़ार की आकर्षक चीज़ें उसे अपनी ओर खींचती हैं और वह आवश्यकता से अधिक माल जमा कर लेता है। उसके लिए वस्तु की उपयोगिता से अधिक यह सुख महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि उसके पास उसे खरीदने की क्षमता है। इस प्रकार माल-असबाब की बहुतायत पैसे की पावर का दिखाई देने वाला प्रमाण बन जाती है।

चरण 2: संचय द्वारा शक्ति का रस समझिए दूसरे रूप में मनुष्य पैसा खर्च करने के बजाय उसे जोड़ते रहने में आनंद पाता है। वह अपनी

संचित राशि को देखकर स्वयं को समर्थ और संपन्न अनुभव करता है। खरीदने की क्षमता होते हुए भी वह धन से चिपका रहता है और उसके बढ़ने में अपनी शक्ति की वृद्धि देखता है। यह धन के संचय से मिलने वाला संतोष है, जिसमें वास्तविक उपयोग के स्थान पर धन का स्वामित्व ही आकर्षण का केंद्र बन जाता है।

चरण 3: दोनों रूपों की समान वृत्ति पहचानिए एक व्यक्ति खरीदी हुई वस्तुओं से अपना सामर्थ्य अनुभव करता है, दूसरा संचित पैसे से। दोनों स्थितियों में पैसे की शक्ति का सुख प्रमुख है। पाठ आवश्यकताओं की स्पष्ट पहचान पर बल देता है, ताकि मनुष्य अनावश्यक खरीदारी या धन के मोह में अपना विवेक न खो दे।

चरण 4: निष्कर्ष पैसे की पावर का रस दो रूपों में लिया जाता है: धन खर्च करके अनेक वस्तुएँ खरीदने और उनका प्रदर्शन करने में, तथा पैसा खर्च न करके उसे संचित करते रहने में।

त्वरित सुझाव: दोनों रूपों को खर्च करके वस्तुएँ जमा करना और खर्च रोककर पैसा जमा करना लिखकर अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

11(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 'पहलवान की ढोलक' कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन के जीवन में निजी संघर्ष, राजाश्रय, आश्रय का अंत और महामारी प्रमुख मोड़ हैं।
- ढोलक की ध्वनि पहले उसकी कुश्ती की प्रेरणा और बाद में गाँववालों के लिए जीवन-संघर्ष का संबल बनती है।

चरण 1: अनाथ बालक से पहलवान बनने तक का परिवर्तन देखिए बचपन में माता-पिता की मृत्यु के बाद लुट्टन का पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया। गाँव के लोग उसकी सास को सताते थे। उनसे मुकाबला करने की इच्छा और अच्छे पोषण ने उसे मजबूत बनाया। मेले में उसने प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को चुनौती दी और ढोलक की ताल से प्रेरणा लेकर उसे हरा दिया। इस विजय से उसका जीवन बदल गया; राजा ने उसे संरक्षण दिया और वह राज-पहलवान बनकर सम्मानित जीवन जीने लगा। पत्नी की मृत्यु के बाद उसके दोनों बेटे ही उसका पारिवारिक सहारा रहे; उसने उन्हें भी पहलवानी सिखाई।

चरण 2: राजाश्रय समाप्त होने का प्रभाव बताइए राजा की मृत्यु के बाद नए शासक की रुचि कुश्ती में नहीं रही। लुट्टन और उसके दोनों बेटों को मिलने वाला संरक्षण समाप्त हो गया। उन्हें गाँव लौटना पड़ा। लुट्टन ने गाँव में युवकों को कुश्ती सिखाने का प्रयास किया, किंतु गरीबी और कमजोर आर्थिक सहारे के कारण उसका सम्मानपूर्ण जीवन फिर अभाव और संघर्ष में बदल गया।

चरण 3: महामारी से आए अंतिम परिवर्तन को समझिए गाँव में महामारी फैलने पर लोग भय और निराशा में डूब गए। लुट्टन रात को ढोलक बजाकर उन्हें साहस देता रहा। उसके दोनों बेटे भी बीमारी से मर गए, फिर भी उसने ढोलक बजाना बंद नहीं किया। अंत में स्वयं लुट्टन की मृत्यु हो गई और ढोलक की प्रेरक आवाज़ सदा के लिए शांत हो गई। इस मोड़ पर उसका व्यक्तिगत संघर्ष पूरे गाँव की जिजीविषा से जुड़ जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष लुट्टन अनाथ बालक से विजयी राज-पहलवान बना, राजाश्रय छिनने पर निर्धन ग्रामीण प्रशिक्षक हुआ और महामारी में बेटों को खोकर अंततः स्वयं भी चल बसा। हर कठिन मोड़ पर ढोलक उसका संबल रही।

त्वरित सुझाव: घटनाएँ क्रम से लिखिए: अनाथ बचपन, चाँद सिंह पर विजय, राजाश्रय का अंत और महामारी; प्रत्येक के साथ जीवन में आया बदलाव जोड़िए।

11(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 'चार्ली चैप्लिन यानी हम सब' के लेखक ने चार्ली का भारतीयकरण किसे कहा और क्यों ? गाँधी और नेहरू ने भी उनका सान्निध्य क्यों चाहा ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली का हास्य साधारण मनुष्य की असहायता, संघर्ष और करुणा से जुड़ा है; इसलिए अलग-अलग देशों के दर्शक उसमें अपना अनुभव पहचानते हैं।
- भारतीयकरण का अर्थ चार्ली की मानवीय छवि को भारतीय समाज और जीवन की परिस्थितियों में रचनात्मक रूप देना है।

चरण 1: भारतीयकरण का प्रसंग पहचानना लेखक विष्णु खरे ने राज कपूर द्वारा अपनी फ़िल्म **आवारा** में चार्ली की छवि को भारतीय परिवेश में प्रस्तुत करने को उनका भारतीयकरण कहा है। राज कपूर का साधारण, अभावग्रस्त और संघर्षशील नायक अपनी भोली भंगिमाओं तथा हास्य के भीतर छिपे दुःख के कारण चार्ली के चरित्र की याद दिलाता है।

चरण 2: भारतीयकरण का कारण समझना चार्ली का पात्र प्रतिष्ठा और सम्पन्नता से वंचित होने पर भी मनुष्यता नहीं छोड़ता। राज कपूर ने इस चरित्र की करुणा, भोलापन और विपरीत परिस्थितियों में जीने की इच्छा को भारतीय सामाजिक अनुभवों से जोड़ा। इस तरह विदेशी कलाकार की नकल भर करने के बजाय चार्ली की कला का भाव भारतीय दर्शकों के जीवन से जुड़ गया।

चरण 3: गाँधी और नेहरू के आकर्षण का कारण गाँधी और नेहरू जैसे व्यक्तित्व भी चार्ली का सान्निध्य चाहते थे क्योंकि उनकी कला में विश्वव्यापी मानवीय संवेदना थी। चार्ली सामान्य और पीड़ित मनुष्य के दुःख को समझते थे तथा हास्य के माध्यम से उसके प्रति आत्मीयता जगाते थे। उनकी लोकप्रियता देश, भाषा और संस्कृति की सीमाओं से ऊपर थी; यही व्यापक मनुष्यता उनके प्रति सम्मान और आकर्षण का आधार बनी।

चरण 4: निष्कर्ष राज कपूर की **आवारा** में चार्ली की मानवीय छवि का भारतीय रूप उनका भारतीयकरण है। चार्ली की सार्वभौम करुणा और साधारण मनुष्य से आत्मीयता ने गाँधी तथा नेहरू को भी उनके निकट आने के लिए प्रेरित किया।

त्वरित सुझाव: पहले राज कपूर और आवारा का उल्लेख करें; फिर भारतीय जीवन से जुड़ाव तथा गाँधी-नेहरू के आकर्षण को मानवीय संवेदना से स्पष्ट करें।

11(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : नमक ले जाने के बारे में सफ़िया के मन में उठे द्वंद्व के आधार पर उसकी चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-विश्लेषण में पात्र की मनःस्थिति, निर्णय और आचरण को जोड़कर उसकी विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं।
- नमक सिख बीबी की जन्मभूमि की स्मृति और भावनात्मक लगाव का प्रतीक है; सफ़िया का द्वंद्व इसी लगाव तथा सीमा के नियमों के बीच उत्पन्न होता है।

चरण 1: द्वंद्व का मूल बताना सिख बीबी ने सफ़िया से लाहौरी नमक लाने को कहा था। उनके लिए वह साधारण खाद्य पदार्थ नहीं, अपने वतन की याद था। सफ़िया उनकी इच्छा पूरी करना चाहती थी, पर उसे बताया गया कि नमक सीमा पार ले जाना प्रतिबंधित है। इसलिए उसके मन में प्रश्न उठा कि नमक ले जाए या छोड़ दे और ले जाए तो छिपाकर या बताकर।

चरण 2: संवेदनशीलता और वचनबद्धता सफ़िया सिख बीबी के मन में बसे जन्मभूमि के प्रेम को समझती है। वह नमक को केवल कम मूल्य की वस्तु मानकर उनकी इच्छा की उपेक्षा नहीं करती। नमक पहुँचाने की चिंता उसके स्नेह, सहानुभूति तथा दिए हुए वचन को निभाने की दृढ़ता को प्रकट करती है। उसका उद्देश्य निजी लाभ नहीं, किसी के भावनात्मक दुःख को कम करना है।

चरण 3: ईमानदारी, साहस और मानवीय दृष्टि छिपाकर नमक ले जाने का विचार उसे चैन नहीं देता। अंततः वह नमक की बात कस्टम अधिकारी के सामने रखती है। यह निर्णय उसकी ईमानदारी और परिणाम का सामना करने के साहस को दिखाता है। उसकी दृष्टि में धर्म और राष्ट्रीय सीमाओं के पार भी मनुष्यों का प्रेम महत्त्वपूर्ण है; इसीलिए वह सिख बीबी की भावना को अपनी चिंता बना लेती है।

चरण 4: निष्कर्ष नमक ले जाने का द्वंद्व सफ़िया को संवेदनशील, स्नेही, वचन निभाने वाली, ईमानदार और साहसी स्त्री के रूप में सामने लाता है। वह मानवीय संबंधों को धर्म तथा देशों की सीमाओं से ऊपर रखती है।

त्वरित सुझाव: हर चारित्रिक गुण को किसी निर्णय से जोड़ें: बीबी की पीड़ा समझना, नमक पहुँचाने का निश्चय और अधिकारी को सच बताना।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए : क्या पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है ? तर्क-सहित उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी की मूल संवेदना उसके केंद्रीय मानवीय अनुभव में होती है; परिवेश के प्रभाव उस अनुभव को स्पष्ट करते हैं।
- सिल्वर वैडिंग में यशोधर बाबू और नई पीढ़ी के बीच जीवन-मूल्यों, संबंधों तथा आधुनिकता को लेकर अंतर उभरता है।

चरण 1: पाश्चात्य प्रभाव की भूमिका कहानी में विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ को सिल्वर वैडिंग के रूप में मनाना, आधुनिक रहन-सहन और उपहार देने की शैली पाश्चात्य प्रभाव को सामने लाते हैं। यशोधर बाबू इन तौर-तरीकों से सहज नहीं हैं, जबकि उनके परिवार के सदस्य इन्हें खुशी और प्रगति का स्वाभाविक अंग मानते हैं। इस कारण पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव कहानी का महत्त्वपूर्ण प्रसंग अवश्य है।

चरण 2: केंद्रीय संवेदना पहचानना फिर भी केवल पाश्चात्य प्रभाव को कहानी की मूल संवेदना कहना अधूरा होगा। केंद्र में पुरानी और नई पीढ़ी का वैचारिक अंतर, बदलते पारिवारिक संबंध तथा अपने ही घर में यशोधर बाबू का अकेलापन है। वे किशनदा से मिले सादगी, अनुशासन और आत्मीयता के संस्कारों को सँजोए हैं; नई पीढ़ी सफलता, सुविधा तथा आधुनिक जीवन-शैली को अधिक महत्त्व देती है।

चरण 3: कथाप्रसंग से तर्क पुष्ट करना बेटा पिता को ड्रेसिंग गाउन देता है, पर यशोधर बाबू इस बात से अधिक संतुष्ट होते कि बेटा सवेरे उनके लिए चाय बनाने का आत्मीय प्रस्ताव करता। इससे स्पष्ट है कि समस्या केवल विदेशी वस्तु या उत्सव की नहीं, संबंधों में अपेक्षित अपनत्व की है। नई पीढ़ी का स्नेह व्यक्त करने का ढंग और पिता की भावनात्मक अपेक्षा एक-दूसरे से मेल नहीं खाते।

चरण 4: निष्कर्ष पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव कहानी में पीढ़ियों के अंतर को उजागर करता है। उसकी मूल संवेदना बदलते जीवन-मूल्यों के बीच पीढ़ियों का द्वंद्व, संवाद की कमी और यशोधर बाबू का अकेलापन है।

त्वरित सुझाव: पाश्चात्य प्रभाव को स्वीकार करके उसकी सीमा बताइए; ड्रेसिंग गाउन और चाय वाली अपेक्षा से मूल पारिवारिक द्वंद्व सिद्ध कीजिए।

12(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए : श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं का उल्लेख करें जिन्होंने कविताओं के प्रति 'जूझ' पाठ के लेखक के मन में रुचि जगाई । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- साहित्य के प्रभावी अध्यापन में अर्थ समझाने के साथ लय, भाव और कल्पना का अनुभव भी कराया जाता है।
- जूझ में सौंदलगेकर का काव्य-प्रेम लेखक के भीतर कविता सुनने, समझने और स्वयं रचने की रुचि जगाता है।

चरण 1: सस्वर और भावपूर्ण अध्यापन श्री सौंदलगेकर कविता को केवल पुस्तक का पाठ नहीं रहने देते थे। वे उसे लय और भाव के साथ गाकर सुनाते तथा उसके अर्थ और सौंदर्य को खुलकर समझाते थे। उनके स्वर, अभिनय और तन्मयता से कविता का भाव सजीव हो उठता था। लेखक उनके पढ़ाने में पूरी तरह रम जाता और कविता की ध्वनि तथा लय को भीतर महसूस करने लगता था।

चरण 2: पाठ से आगे काव्य-जगत का परिचय वे स्वयं भी कविताएँ लिखते थे। पढ़ाते समय अन्य कवियों की कविताएँ सुनाते और कवियों के प्रसंग बताते थे। इससे लेखक के लिए कवि कोई दूर की असाधारण सत्ता नहीं रहे, बल्कि जीवन के अनुभवों को शब्द देने वाले मनुष्य बने। परिचित परिवेश और अपने अनुभवों से भी कविता बन सकती है, यह विश्वास उसके मन में जागा।

चरण 3: स्वतंत्र अभ्यास और सृजन की प्रेरणा शिक्षक की शैली से प्रभावित होकर लेखक एकांत में, खेतों में काम करते हुए भी, कविताएँ गुनगुनाने और उनका अभिनय करने लगा। लय तथा शब्दों के इस अभ्यास से उसकी कल्पना सक्रिय हुई और उसने स्वयं कविता बनाने का प्रयत्न किया। सौंदलगेकर से मिला मार्गदर्शन और प्रोत्साहन उसकी आरंभिक रचनात्मक रुचि को आगे बढ़ाने में सहायक हुआ।

चरण 4: निष्कर्ष सौंदलगेकर का भावपूर्ण गायन, सहज व्याख्या, अन्य कविताओं और कवियों से परिचय तथा सृजन के लिए प्रोत्साहन लेखक की काव्य-रुचि के मुख्य कारण बने। उन्होंने कविता को उसके लिए जीवंत अनुभव और अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बना दिया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अध्यापन की विशेषता और उसका प्रभाव साथ लिखें: सस्वर पाठ से लय-बोध, कवि-परिचय से विश्वास और प्रोत्साहन से कविता-रचना।

12(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए : पुरातत्त्व के कौन-से चिह्न ऐसे हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि "सिंधु सभ्यता ताक़त से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी ?" [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में पुरातात्त्विक अवशेषों के आधार पर सिंधु सभ्यता के सामाजिक जीवन और नागरिक व्यवस्था का विवेचन किया गया है।
- सत्ता के प्रदर्शन वाले स्मारकों और जनोपयोगी निर्माणों का अंतर इस सभ्यता की प्रकृति समझने में सहायक है।

चरण 1: शक्ति-प्रदर्शन के चिह्नों का अभाव पहचानें मोहनजोदड़ो के अवशेषों में ऐसे भव्य राजमहल, विराट मंदिर या राजाओं की विशाल समाधियाँ नहीं मिलतीं जो शासकों की निरंकुश सत्ता और वैभव का प्रदर्शन करें। खुदाई से प्राप्त वस्तुओं में औज़ार तो मिले हैं, किंतु हथियारों का वैसा बड़ा भंडार नहीं मिलता जिससे युद्ध और सैन्य शक्ति की प्रधानता प्रमाणित हो। इसलिए पाठ में इस सभ्यता की पहचान किसी विजेता राजा या उसके आतंक से नहीं बनती।

चरण 2: नागरिक सुविधाओं से सामाजिक समझ का प्रमाण दें सुनियोजित सड़कें, व्यवस्थित मकान, कुएँ, ढकी हुई नालियाँ और जल-निकासी की व्यवस्था नागरिक जीवन की आवश्यकताओं के प्रति सजगता दिखाते हैं। विशाल स्नानागार जैसे सार्वजनिक निर्माण भी सामूहिक उपयोग को महत्त्व देते हैं। नगर के निर्माण में सफ़ाई, सुविधा और व्यवस्था का इतना ध्यान होना बताता है कि लोगों में साझा नियमों और नागरिक अनुशासन की समझ थी। यहाँ नगर-योजना का केंद्र केवल शासक का वैभव नहीं, सामान्य मनुष्य का जीवन भी है।

चरण 3: निष्कर्ष राजसत्ता और युद्ध के दिखावटी चिह्नों का अभाव तथा विकसित जनोपयोगी नगर-व्यवस्था इस विचार को पुष्ट करते हैं कि सिंधु सभ्यता ताक़त के भय की अपेक्षा सामाजिक समझ से अधिक अनुशासित थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों तरह के प्रमाण जोड़ें: राजमहलों और हथियारों की प्रधानता का अभाव तथा सड़क, नाली और स्नानागार जैसी नागरिक सुविधाओं की उपस्थिति।

12(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर बताइए कि ऐन की डायरी उसके सुख-दुख का भावनात्मक दस्तावेज़ भी है । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी व्यक्ति की निजी अनुभूतियों, आशाओं और उलझनों की आत्मीय अभिव्यक्ति होती है।
- ऐन की डायरी में युद्ध की घटनाओं के साथ एक किशोरी के संवेदनशील मन और बदलते संबंधों का चित्र मिलता है।

चरण 1: भय और अकेलेपन की अभिव्यक्ति समझें नाज़ियों के आतंक से बचने के लिए छिपकर रहने वाली ऐन स्वतंत्र जीवन से वंचित थी। पकड़े जाने का भय, बाहर न जा पाने की विवशता और सीमित स्थान में लगातार साथ रहने से पैदा तनाव उसे व्यथित करते थे।

परिवार में मतभेद और अपनी बात न समझे जाने का अनुभव उसके अकेलेपन को बढ़ाते थे। वह डायरी को 'किट्टी' नाम की आत्मीय सहेली मानकर उससे वे बातें कहती है जिन्हें दूसरों के सामने सहज रूप से नहीं कह पाती। इसीलिए डायरी उसके भीतरी दुख की साक्षी बनती है।

चरण 2: स्नेह, आशा और आकांक्षाओं को पहचानें ऐन की अनुभूतियाँ केवल भय तक सीमित नहीं हैं। पीटर के प्रति उसका आकर्षण और निकटता की इच्छा किशोर मन की स्नेह पाने की लालसा दिखाते हैं। प्रकृति और खुले आकाश की चाह उसके स्वतंत्र जीवन के स्वप्न को व्यक्त करती है। पढ़ने-लिखने में रुचि तथा लेखिका बनने की आकांक्षा उसके उत्साह और भविष्य के प्रति विश्वास को प्रकट करती है। वह अपने व्यवहार, कमियों और संबंधों पर भी विचार करती है; इससे डायरी में उसकी विकसित होती आत्मचेतना उभरती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार ऐन की डायरी में भय, उदासी और अकेलेपन के साथ प्रेम, प्रसन्नता, आशा तथा भविष्य के स्वप्न भी दर्ज हैं। इसलिए वह ऐतिहासिक घटनाओं के विवरण के साथ उसके सुख-दुख का भावनात्मक दस्तावेज़ भी है।

त्वरित सुझाव: भावनात्मक पक्ष स्पष्ट करने के लिए एक दुख का उदाहरण और एक आशा या स्नेह का उदाहरण दें; केवल युद्ध की घटनाएँ गिनाकर उत्तर समाप्त न करें।

13(क). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए : 'ऐन की डायरी' एक ऐतिहासिक दौर का जीवन्त दस्तावेज़ है — इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐतिहासिक दस्तावेज़ किसी काल की परिस्थितियों और उनके मानवीय प्रभावों का प्रमाण देता है।
- ऐन की डायरी द्वितीय विश्वयुद्ध के समय नाज़ी उत्पीड़न के बीच जी रहे एक यहूदी परिवार का प्रत्यक्ष अनुभव सामने लाती है।

चरण 1: तत्कालीन इतिहास का प्रत्यक्ष चित्र स्पष्ट करें ऐन की डायरी में यहूदियों के प्रति नाज़ियों की क्रूरता, उनकी स्वतंत्रता पर प्रतिबंध और गिरफ्तारी का भय सामने आता है। ऐन और उसके परिवार का छिपकर रहना बताता है कि केवल यहूदी होने के कारण साधारण लोगों का जीवन असुरक्षित हो गया था। वे सामान्य रूप से घर से बाहर निकलने और सामाजिक जीवन में भाग लेने तक से वंचित थे। इस प्रकार डायरी उस दौर की जातीय घृणा और दमन को पीड़ित व्यक्ति की दृष्टि से दर्ज करती है।

चरण 2: युद्ध के रोज़मर्रा के प्रभावों से जीवन्तता दिखाएँ छिपे हुए लोगों को भोजन और आवश्यक वस्तुओं की कमी, बमबारी की आशंका तथा हर आहट से पकड़े जाने का डर झेलना पड़ता है। उनकी आशाएँ युद्ध की ख़बरों और मुक्ति की संभावनाओं से जुड़ी रहती हैं। बाहर की हिंसा के बीच भीतर के छोटे विवाद, स्नेह, ऊब और भविष्य के स्वप्न भी चलते रहते हैं। ये निजी अनुभव बताते हैं कि युद्ध केवल सेनाओं का संघर्ष नहीं, सामान्य मनुष्यों के पूरे जीवन का संकट था। घटनाएँ अनुभव के साथ दर्ज होने से पाठक उस समय के वातावरण और मनःस्थिति को महसूस कर पाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः ऐन की डायरी एक ऐतिहासिक दौर का जीवन्त दस्तावेज़ है। वह द्वितीय विश्वयुद्ध और यहूदी उत्पीड़न को केवल घटनाओं के रूप में नहीं, भय, अभाव और आशा से भरे मानवीय अनुभव के रूप में सुरक्षित रखती है।

त्वरित सुझाव: 'ऐतिहासिक' सिद्ध करने के लिए नाज़ी उत्पीड़न का उल्लेख करें और 'जीवन्त' सिद्ध करने के लिए छिपे जीवन के भय, अभाव तथा आशा के अनुभव जोड़ें।

13(ख). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए : 'जूझ' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' का अर्थ है विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य के लिए निरंतर संघर्ष करना।
- किसी रचना के शीर्षक की सार्थकता उसके मुख्य पात्र, केंद्रीय अनुभव और मूल संदेश से संबंध के आधार पर स्पष्ट होती है।

चरण 1: शिक्षा के लिए किए संघर्ष से शीर्षक जोड़ें आनंदा पढ़ना चाहता है, लेकिन उसके पिता उसे खेती के काम में लगाकर विद्यालय जाने से रोकते हैं। उसके सामने पारिवारिक दबाव और आर्थिक कठिनाइयाँ हैं। वह इन्हें अपनी नियति मानकर बैठ नहीं जाता। माँ के सहयोग और दत्ता जी राव के हस्तक्षेप से उसे फिर पढ़ने का अवसर मिलता है। फिर भी उसे विद्यालय जाने से पहले और लौटने के बाद खेतों का काम करना पड़ता है। इस प्रकार पढ़ाई और श्रम दोनों निभाने का उसका प्रयास शीर्षक का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

चरण 2: आत्मविकास और सृजन के संघर्ष को स्पष्ट करें विद्यालय लौटने पर भी आनंदा की कठिनाइयाँ समाप्त नहीं होतीं। पढ़ाई में आगे बढ़ने और अपनी स्थिति सुधारने के लिए वह लगातार परिश्रम करता है। सौंदलगेकर मास्टर की कविता-पाठ शैली से प्रेरित होकर उसके भीतर कविता के प्रति लगाव जागता है। खेतों के काम के बीच भी वह कविताएँ गुनगुनाता और स्वयं रचना का अभ्यास करता है। बाहरी बाधाओं से लड़ने के साथ वह अपनी प्रतिभा को विकसित करने के लिए भी जूझता है। यही लगन उसे अभावों के बीच शिक्षा और साहित्य की ओर बढ़ाती है।

चरण 3: निष्कर्ष 'जूझ' शीर्षक संक्षिप्त, प्रभावपूर्ण और सार्थक है, क्योंकि पूरी कथा आनंदा की शिक्षा, आत्मसम्मान और रचनात्मक विकास के लिए किए गए संघर्ष को व्यक्त करती है। यह शीर्षक कठिन परिस्थितियों में हार न मानने की उसकी जिजीविषा को सामने लाता है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक का अर्थ बताकर पिता के विरोध, खेत और विद्यालय की दोहरी ज़िम्मेदारी तथा कविता-रचना के प्रयास को उससे जोड़ें; केवल कथासार लिखना पर्याप्त नहीं है।

13(ग). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए : क्या 'पीढ़ी के अन्तराल' को 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है ? तर्क-सहित उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पीढ़ियों का अंतराल केवल आयु का अंतर नहीं, बल्कि दो पीढ़ियों की जीवन-दृष्टि, मूल्यों, रुचियों और व्यवहार में दिखाई देने वाली दूरी है।
- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर बाबू और उनके परिवार के बदलते जीवन के माध्यम से परंपरा तथा आधुनिकता का तनाव व्यक्त हुआ है।

चरण 1: मूल संवेदना की पहचान हाँ, 'पीढ़ी के अन्तराल' को 'सिल्वर वैडिंग' की मूल संवेदना कहा जा सकता है। यशोधर बाबू किशनदा से प्राप्त सादगी, अनुशासन, आत्मीयता और सामुदायिक संबंधों को महत्त्व देते हैं। दूसरी ओर उनकी संतानें आधुनिक रहन-सहन, आर्थिक सफलता और निजी सुविधा को अधिक महत्त्व देती हैं। इसी अंतर के कारण एक ही घर में रहते हुए भी यशोधर बाबू अपने को परिवार से अलग अनुभव करते हैं।

चरण 2: कहानी के प्रसंगों से तर्क देना विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर बच्चों द्वारा आयोजित 'सिल्वर वैडिंग' का उत्सव परिवार के लिए आनंद और आधुनिक सामाजिक व्यवहार का अवसर है, पर यशोधर बाबू उससे सहज रूप से जुड़ नहीं पाते। बेटे की नौकरी और बढ़ी हुई आय को लेकर भी उनका दृष्टिकोण बच्चों जैसा नहीं है। पत्नी का बच्चों की जीवन-शैली के निकट जाना उनकी अकेलेपन की अनुभूति को बढ़ाता है। भूषण द्वारा दिया गया गाउन स्नेह का उपहार है, किंतु उसके प्रसंग में पिता का सुबह दूध लेने जाना स्वाभाविक मान लिया जाता है; पिता को अपेक्षित आत्मीय संवेदना पूरी तरह नहीं मिलती। इन प्रसंगों से स्पष्ट है कि समस्या केवल बाहरी वेशभूषा की नहीं, पारिवारिक भूमिकाओं और भावनाओं को समझने की भी है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः पीढ़ियों के मूल्यों और अपेक्षाओं का अंतर कहानी का केंद्रीय आधार है। उससे उत्पन्न संवादहीनता, उपेक्षा और यशोधर बाबू का अकेलापन इस संवेदना को अधिक मार्मिक बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: पीढ़ियों के अंतर को समझाते समय वर्षगाँठ के उत्सव और गाउन के उपहार जैसे प्रसंग जोड़ें; केवल 'पुराने और नए विचारों में अंतर' लिखकर न रुकें।

14. 'सिल्वर वैडिंग' के कथानायक यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्तित्व हैं और नई पीढ़ी द्वारा उनके विचारों को अपनाना ही उचित है — इस कथन के पक्ष या विपक्ष में तर्क दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी साहित्यिक पात्र का मूल्यांकन उसके गुणों, सीमाओं और परिस्थितियों को साथ रखकर करना चाहिए। आदर्श गुणों का सम्मान सभी विचारों को बिना विवेक अपनाने की बाध्यता नहीं बनाता।
- 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू के पारंपरिक संस्कार और नई पीढ़ी की आधुनिक जीवन-दृष्टि का संघर्ष पारिवारिक संवेदनशीलता तथा संवाद की आवश्यकता सामने लाता है।

चरण 1: कथन के प्रति अपना पक्ष स्पष्ट करना मैं इस कथन के विपक्ष में हूँ कि यशोधर बाबू पूर्णतः आदर्श व्यक्तित्व हैं और नई पीढ़ी के लिए उनके सभी विचारों को अपनाना ही उचित है। उनके व्यक्तित्व में अनेक अनुकरणीय गुण हैं, किंतु उनमें बदलते समय के साथ तालमेल बैठाने की कठिनाई भी दिखाई देती है। किसी व्यक्ति की अच्छाइयों का सम्मान करते हुए उसके प्रत्येक व्यवहार को आदर्श मान लेना उचित नहीं है।

चरण 2: उनके अनुकरणीय गुणों को स्वीकार करना यशोधर बाबू सादगी, अनुशासन, आत्मीय संबंधों और अपने से जुड़े लोगों के प्रति दायित्व को महत्त्व देते हैं। किशनदा के सान्निध्य से प्राप्त संस्कार उनके जीवन को दिशा देते हैं। आधुनिक दिखावे और धन को ही सफलता का मापदंड मानने के प्रति उनका संकोच विचारणीय है। नई पीढ़ी उनसे यह सीख सकती है कि परिवार और समाज का मूल्य केवल आय, सुविधाओं या बाहरी आकर्षण से नहीं आँका जा सकता।

चरण 3: उनकी सीमाओं का परीक्षण करना दूसरी ओर यशोधर बाबू अपने पुराने अनुभवों और मान्यताओं को वर्तमान जीवन पर भी लागू करना चाहते हैं। बेटे की नौकरी तथा आय, पत्नी-बच्चों की बदली रुचियों और विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ के उत्सव के प्रति वे सहज नहीं हो पाते। अतीत के प्रति गहरा लगाव उन्हें नई परिस्थितियों की संभावनाएँ समझने से रोकता है। नई पीढ़ी के हर परिवर्तन को असंगत समझने से परिवार में दूरी बढ़ती है। इसलिए बच्चों से यह अपेक्षा करना उचित नहीं कि वे अपनी रुचियों और समय की आवश्यकताओं को छोड़कर उन्हीं की जीवन-पद्धति अपनाएँ।

चरण 4: पारिवारिक प्रसंग से संतुलित दृष्टि विकसित करना भूषण का गाउन देना पिता के प्रति लगाव व्यक्त करता है, लेकिन उसी प्रसंग में पिता की दैनिक जिम्मेदारियों और भावनात्मक अपेक्षाओं को समझने की कमी भी उभरती है। इससे नई पीढ़ी की संवेदनहीनता पर प्रश्न उठता है; फिर भी समाधान पुराने विचारों को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेना नहीं है। बच्चों को पिता के अनुभवों का सम्मान और उनकी जिम्मेदारियों में भागीदारी करनी चाहिए, जबकि पिता को बच्चों की स्वतंत्र सोच को सुनना चाहिए। पारस्परिक संवाद ही इस दूरी को कम कर सकता है।

चरण 5: निष्कर्ष यशोधर बाबू सम्माननीय और मानवीय पात्र हैं, किंतु उनकी सीमाएँ भी हैं। नई पीढ़ी को उनकी सादगी, आत्मीयता और कर्तव्यबोध अपनाने चाहिए; सभी विचारों का अंधानुकरण करने के स्थान पर विवेक तथा समयानुकूल परिवर्तन को महत्त्व देना उचित है।

त्वरित सुझाव: कथन के विपक्ष में लिखते हुए यशोधर बाबू के गुण न नकारें; दो गुण और दो सीमाएँ कहानी के प्रसंगों से दिखाकर अपने निर्णय को तर्कपूर्ण बनाएँ।

अथवा

14. नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी-व्यवस्था के आधार पर लेखक सिंधु घाटी सभ्यता को 'जल संस्कृति' कहना चाहता है। लेखक के इस विचार के पक्ष या विपक्ष में अपने तर्क दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जल संस्कृति' का अर्थ ऐसी जीवन-पद्धति है जिसमें जल की उपलब्धता, उपयोग, स्वच्छता और निकासी को नगर-निर्माण तथा सामुदायिक जीवन में विशेष महत्त्व मिला हो।
- ओम थानवी के 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो के पुरातात्त्विक अवशेषों के आधार पर सिंधु सभ्यता के विकसित नागरिक जीवन का चित्र मिलता है।

चरण 1: लेखक के विचार के प्रति सहमति प्रकट करना मैं लेखक के इस विचार के पक्ष में हूँ कि सिंधु घाटी सभ्यता को 'जल संस्कृति' कहा जा सकता है। यहाँ जल केवल दैनिक आवश्यकता पूरी करने का साधन नहीं था; उसके प्रबंधन ने नगर की बनावट, घरों की सुविधाओं और सार्वजनिक जीवन को प्रभावित किया था। नदी, कुओं, स्नानागार और निकासी-व्यवस्था को एक साथ देखने पर जल के प्रति इस सभ्यता की सजगता स्पष्ट होती है।

चरण 2: नदी और कुओं से जल की उपलब्धता समझना सिंधु नदी इस सभ्यता के जीवन का महत्त्वपूर्ण आधार थी। उसके जल और आसपास के उपजाऊ क्षेत्र ने बस्तियों तथा आजीविका को सहारा दिया। मोहनजोदड़ो में अनेक कुओं का मिलना बताता है कि नगरवासियों ने जल-प्राप्ति के स्थानीय साधन भी विकसित किए थे। घरों और बस्तियों के निकट जल की व्यवस्था से दैनिक उपयोग में सुविधा होती थी। यह केवल प्राकृतिक नदी पर निर्भर रहने के बजाय योजनाबद्ध ढंग से पानी उपलब्ध कराने की समझ का प्रमाण है।

चरण 3: स्नानागार से सामूहिक जीवन और स्वच्छता का संबंध जोड़ना विशाल सार्वजनिक स्नानागार इस नगर की विशिष्ट उपलब्धि है। उसमें उतरने की सीढ़ियाँ, पक्की ईंटों का निर्माण और जल-प्रबंध बताते हैं कि उसका निर्माण सोच-समझकर किया गया था। भवनों में स्नान की सुविधाएँ भी जल और शारीरिक स्वच्छता को मिले महत्त्व की ओर संकेत करती हैं। सार्वजनिक स्नानागार का अस्तित्व बताता है कि स्नान की व्यवस्था निजी घरों तक सीमित नहीं थी; उसे सामुदायिक स्तर पर भी स्थान मिला था।

चरण 4: निकासी-व्यवस्था के आधार पर निष्कर्ष तक पहुँचना पानी उपलब्ध कराने के साथ इस्तेमाल किए गए पानी को बाहर निकालने की व्यवस्था भी आवश्यक है। मोहनजोदड़ो के घरों की नालियों का बड़ी नालियों से जुड़ना और निकासी का सुव्यवस्थित होना विकसित नगर-योजना का प्रमाण है। ऐसी व्यवस्था गंदे पानी के जमाव को रोकने और नागरिक स्वच्छता बनाए रखने में सहायक रही होगी। नदी से लेकर कुओं, स्नान-स्थलों और नालियों तक फैली यह योजना दिखाती है कि जल का पूरा उपयोग-चक्र नगरवासियों की चिंता का विषय था।

चरण 5: निष्कर्ष अतः जल की उपलब्धता, सामूहिक स्नान, घरेलू स्वच्छता और बेजोड़ निकासी-व्यवस्था लेखक के मत को पुष्ट करती हैं। 'जल संस्कृति' कहना सिंधु सभ्यता की उस विशेषता को रेखांकित करता है जिसमें पानी और नागरिक जीवन का गहरा संबंध था।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नदी, कुएँ, स्नानागार और निकासी चारों पर अलग तर्क दें तथा अंत में उन्हें जल-प्रबंधन और नागरिक स्वच्छता के साझा विचार से जोड़ें।